

وَمَا أَبْرَىٰ نَفْسِي إِنَّ النَّفْسَ لَأَمَّارَةٌ بِالسُّوءِ إِلَّا						
मगर	बुराई	सिखाने वाला	नफ्स	वेशक	अपना नफ्स	और पाक (बेकुसूर) नहीं कहता
مَا رَحِمَ رَبِّي إِنَّ رَبِّي غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٥٣﴾ وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُونِي						
ले आओ मेरे पास	बादशाह	और कहा	53	निहायत मेहरबान	बख्शने वाला	मेरा रब वेशक मेरा रब जिस पर रहम किया
بِهِ اسْتَحْلِصْهُ لِنَفْسِي فَلَمَّا كَلَّمَهُ قَالَ إِنَّكَ الْيَوْمَ لَدِينَا						
हमारे पास	आज	वेशक तुम	उस ने कहा	उस से बात की	फिर जब	अपनी ज्ञात के लिए उस को खास करूँ उस को
مَكِينٌ أَمِينٌ ﴿٥٤﴾ قَالَ اجْعَلْنِي عَلَىٰ خَزَائِنِ الْأَرْضِ إِنِّي حَفِيظٌ						
हिफाजत करने वाला	वेशक मैं	ज़मीन (मुल्क)	खज़ाने	पर	मुझे कर दे	कहा 54 अमीन बाविकार
عَلَيْمٌ ﴿٥٥﴾ وَكَذَلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ يَتَّبُوا مِنْهَا حَيْثُ						
जहाँ	उस से (में)	वह रहते	ज़मीन में (मुल्क पर)	यूसुफ (अ) को	हम ने कुदरत दी	और उसी तरह 55 इल्म वाला
يَشَاءُ ۚ نَصِيبٌ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَشَاءُ وَلَا نُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٦﴾						
56	नेकी करने वाले	बदला	और हम ज़ाए नहीं करते	जिस को हम चाहते हैं	अपनी रहमत	हम पहुँचा देते हैं चाहते वह
وَلَا جُزْءَ الْآخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٥٧﴾ وَجَاءَ						
और आए	57	परहेज़गारी करते	और थे वह	ईमान लाए	उन के लिए जो	और आखिरत का बदला अलबत्ता
إِخْوَةُ يُوسُفَ فَدَخَلُوا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهُ مُنْكَرُونَ ﴿٥٨﴾						
58	वह न पहचाने	उस को	और वह	तो उन्हें पहचान लिया	उस के पास	पस वह दाखिल हुए यूसुफ (अ) भाई
وَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَّازِهِمْ قَالَ ائْتُونِي بِآخِ لَكُمْ مِّنْ أَبِيكُمْ ۖ أَلَا تَرَوْنَ						
क्या तुम नहीं देखते	तुम्हारे बाप से	तुम्हारा (अपना)	भाई	लाओ मेरे पास	कहा उन का सामान	जब उन्हें तैयार कर दिया और जब
أَنِّي أُوْفِي الْكَيْلَ وَأَنَا خَيْرُ الْمُنْزِلِينَ ﴿٥٩﴾ فَإِنْ لَّمْ تَأْتُونِي						
मेरे पास न लाए	फिर अगर	59	उतारने वाला (मेहमान नवाज़)	बेहतरीन	और मैं	पैमाना पूरा करता हूँ कि मैं
بِهِ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِنْدِي وَلَا تَقْرُبُونِ ﴿٦٠﴾ قَالُوا سَنُرَاوِدُ عَنْهُ						
उस के सुतझलिक	हम खाहिश करेंगे	वह बोले	60	और न आना मेरे पास	मेरे पास	तुम्हारे लिए तो कोई नाप नाप नहीं उस को
أَبَاهُ وَأَنَا لَفَعْلُونَ ﴿٦١﴾ وَقَالَ لِفَتْنِهِ اجْعَلُوا بِضَاعَتَهُمْ						
उन की पूजी	और तुम रख दो	अपने खिदमतगारों को	और उस ने कहा	61	ज़रूर करने वाले हैं (करना है)	और हम उस का बाप
فِي رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُونَهَا إِذَا انْقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ						
शायद वह	अपने लोग	तरफ़	जब वह लौटें	उसको मालूम कर लें	शायद वह	उन के बोरों में
يَرْجِعُونَ ﴿٦٢﴾ فَلَمَّا رَجَعُوا إِلَىٰ أَبِيهِمْ قَالُوا يَا أَبَانَا مُنِعَ مِنَّا						
हम से	रोक दिया गया	ऐ हमारे अब्बा	वह बोले	अपना बाप तरफ़	वह लौटे	पस जब 62 फिर आजाएँ
الْكَيْلُ فَأَرْسَلْ مَعَنَا آخَانًا نَّكَتِلُ وَإِنَّا لَهُ لَحَفِظُونَ ﴿٦٣﴾						
63	निगहबान है	उस के	और वेशक हम	नाप (गुल्ला) लाएँ	हमारा भाई	हमारे साथ पस भेज दें नाप

और मैं अपने नफ्स को पाक नहीं कहता, वेशक नफ्स बुराई सिखाने वाला है, मगर जिस पर मेरे रब ने रहम किया, वेशक मेरा रब बख्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (53)

और बादशाह ने कहा उसे मेरे पास ले आओ कि उसे अपनी (खिदमत) के लिए खास करूँ, फिर जब (मलिक) ने उस से बात की कहा वेशक तुम आज हमारे पास बाविकार, अमीन (साहबे एतिबार) हो। (54)

उस ने कहा मुझे (मुकरर) कर दे मुल्क के खज़ानों पर, वेशक मैं हिफाज़त करने वाला, इल्म वाला हूँ। (55)

और उसी तरह हम ने यूसुफ (अ) को मुल्क पर कुदरत दी, वह उस में जहाँ चाहते रहते, हम जिस को चाहते हैं अपनी रहमत पहुँचा देते हैं, और हम बदला ज़ाए नहीं करते नेकी करने वालों का। (56)

और जो ईमान लाए और परहेज़गारी करते रहे, उन के लिए आखिरत का बदला बेहतर है। (57)

और यूसुफ (अ) के भाई आए, पस वह उस के पास दाखिल हुए तो उस ने उन्हें पहचान लिया और वह उस को न पहचाने। (58)

और जब उन का सामान उन्हें तैयार कर दिया तो कहा अपने भाई को मेरे पास लाओ जो तुम्हारे बाप (की तरफ़) से है, क्या तुम नहीं देखते कि मैं पैमाना पूरा (भर) कर देता हूँ और मैं बेहतरीन मेहमान नवाज़ हूँ। (59)

फिर अगर तुम उस को मेरे पास न लाए तो तुम्हारे लिए कोई नाप (गुल्ला) नहीं मेरे पास, और न मेरे पास आना। (60)

वह बोले हम उसके बारे में उस के बाप से खाहिश करेंगे और हमें (यह काम) ज़रूर करना है। (61)

और उस ने अपने खिदमतगारों को कहा उन की पूजी (गुल्ले की कीमत) उन के बोरों में रख दो, शायद वह उस को मालूम कर लें जब वह लौटें अपने लोगों की तरफ़, शायद वह फिर आजाएँ। (62)

पस जब वह अपने बाप की तरफ़ लौटे, बोले ऐ हमारे अब्बा! हम से नाप (गुल्ला) रोक दिया गया, पस हमारे साथ हमारे भाई को भेज दें कि हम गुल्ला लाएँ, और वेशक उसके निगहबान है। (63)

उस ने कहा मैं उस के मुतअल्लिक तुम्हारा क्या एतिवार करूँ मगर जैसे इस से पहले मैं ने उस के भाई के मुतअल्लिक तुम्हारा एतिवार किया, सो अल्लाह बेहतर निगहवान है, और वह तमाम मेहरवानों से बड़ा मेहरवानी करने वाला है। (64)

और जब उन्होंने ने अपना सामान खोला तो उन्होंने ने अपनी पूंजी पाई जो वापस कर दी गई थी उन्हें, बोले, ऐ हमारे अब्बा! (और) हम क्या चाहते हैं? यह हमारी पूंजी है, हमें लौटा दी गई है, और हम अपने घर गल्ला लाएंगे और हम अपने भाई की हिफाज़त करेंगे, और एक ऊंट का बोझ ज़ियादा लेंगे, यह (जो हम लाए हैं) थोड़ा गल्ला है। (65)

उस ने कहा मैं उसे हरगिज़ न भेजूंगा तुम्हारे साथ, यहां तक कि तम मुझे अल्लाह का पुख्ता अहद दो कि तुम उसे मेरे पास ज़रूर ले कर आओगे, मगर यह कि तुम्हें घेर लिया जाए, फिर जब उन्होंने ने उसे (याकूब अ) को पुख्ता अहद दिया, उसने कहा जो हम कह रहे हैं उस पर अल्लाह ज़ामिन है। (66)

और कहा ऐ मेरे बेटो! तुम सब दाखिल न होना एक (ही) दरवाज़े से, (बल्कि) जुदा जुदा दरवाज़ों से दाखिल होना, और मैं तुम्हें बचा नहीं सकता अल्लाह की किसी बात से, अल्लाह के सिवा किसी का हुक्म नहीं, उस पर मैं ने भरोसा किया, पस चाहिए उस पर भरोसा करें भरोसा करने वाले। (67)

और जब वह दाखिल हुए जहां से उन्हें उन के बाप ने हुक्म दिया था, वह उन्हें नहीं बचा सकता था अल्लाह की किसी बात से, मगर याकूब (अ) के दिल में एक ख़ाहिश थी सो वह उस ने पूरी कर ली, और वेशक वह साहबे इल्म था उस का जो हम ने उसे सिखाया था, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (68)

और जब वह यूसुफ़ के पास दाखिल हुए उस ने अपने भाई को अपने पास जगह दी, कहा वेशक मैं तेरा भाई हूँ, जो वह करते थे तू उस पर ग़मगीन न हो। (69)

قَالَ هَلْ آمَنُكُمْ عَلَيْهِ إِلَّا كَمَا آمَنُكُمْ عَلَىٰ أَخِيهِ مِنْ قَبْلُ							
इस से पहले	उस के भाई के मुतअल्लिक	मैं ने तुम्हारा एतिवार किया	जैसे	मगर	उस के मुतअल्लिक	क्या मैं तुम्हारा एतिवार करूँ	उस ने कहा
فَاللَّهُ خَيْرٌ حِفْظًا وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّحِمِينَ ﴿٦٤﴾ وَلَمَّا فَتَحُوا							
उन्होंने ने खोला	और जब	64	तमाम मेहरवानों से बड़ा मेहरवानी करने वाला	और वह	निगहवान	बेहतर	सो अल्लाह
مَتَاعَهُمْ وَجَدُوا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ إِلَيْهِمْ قَالُوا يَا بَنَا							
ऐ हमारे अब्बा	बोले	उन की तरफ़ (उन्हें)	वापस कर दी गई	अपनी पूंजी	उन्होंने ने पाई	अपना सामान	
مَا نَبْغِي هَذِهِ بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ إِلَيْنَا وَنَمِيرُ أَهْلَنَا وَنَحْفَظُ أَخَانَا							
अपना भाई	और हम हिफाज़त करेंगे	अपने घर	और हम गल्ला लाएंगे	हमारी तरफ़	लौटा दी गई	हमारी पूंजी	यह क्या चाहते हैं हम
وَنَزِدَادُ كَيْلٍ بَعِيرٍ ذَلِكَ كَيْلٌ يَسِيرٌ ﴿٦٥﴾ قَالَ لَنْ أُرْسِلَهُ							
हरगिज़ न भेजूंगा उसे	उस ने कहा	65	आसान (थोड़ा)	बोझ (गल्ला)	यह	एक ऊंट	बोझ और ज़ियादा लेंगे
مَعَكُمْ حَتَّىٰ تُؤْتُوا مَوْثِقًا مِّنَ اللَّهِ لَتَأْتَنِي بِهِ إِلَّا أَنْ							
यह कि	मगर	तुम ले आओगे ज़रूर मेरे पास उस को	अल्लाह से (का)	पुख्ता अहद	तुम दो मुझे	यहां तक	तुम्हारे साथ
يُحَاطَ بِكُمْ فَلَمَّا آتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللَّهُ عَلَىٰ مَا نَقُولُ وَكِيلٌ ﴿٦٦﴾							
66	निगहवान (ज़ामिन)	जो हम कहते हैं	पर	अल्लाह कहा उस ने	अपना पुख्ता अहद	उन्होंने ने उसे दिया	फिर जब तुम्हें घेर लिया जाए
وَقَالَ يَبْنَئِي لَا تَدْخُلُوا مِن بَابٍ وَاحِدٍ وَادْخُلُوا مِنْ							
से	और दाखिल होना	एक दरवाज़ा	से	तुम न दाखिल होना	ऐ मेरे बेटो	और उस ने कहा	
أَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ وَمَا أُغْنِي عَنْكُمْ مِّنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ							
किसी चीज़ (बात) से	अल्लाह से (की)	तुम से (को)	और मैं नहीं बचा सकता	जुदा जुदा	दरवाजे से		
إِنَّ الْحُكْمَ إِلَّا لِلَّهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ							
पस चाहिए भरोसा करें	और उस पर	मैं ने भरोसा किया	उस पर	अल्लाह का	सिवा	हुक्म	नहीं
الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿٦٧﴾ وَلَمَّا دَخَلُوا مِنْ حَيْثُ أَمَرَهُمْ أَبُوهُمْ مَا كَانَ							
नहीं था	उन का बाप	उन्हें हुक्म दिया	जहां से	वह दाखिल हुए	और जब	67	भरोसा करने वाले
يُغْنِي عَنْهُمْ مِّنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا حَاجَةً فِي نَفْسِ							
दिल	में	एक ख़ाहिश	मगर	किसी चीज़ (बात)	से	अल्लाह से (की)	उन से (उन्हें)
يَعْقُوبَ قُضِيَ وَأَنَّهُ لَذُو عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنَاهُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ							
अक्सर	और लेकिन	हम ने उसे सिखाया	उस का जो	साहबे इल्म	और वेशक वह	वह उसे पूरी कर ली	याकूब (अ)
النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٦٨﴾ وَلَمَّا دَخَلُوا عَلَىٰ يُوسُفَ أَوَىٰ إِلَيْهِ							
अपने पास	उस ने जगह दी	यूसुफ़ (अ) के पास	वह दाखिल हुए	और जब	68	नहीं जानते	लोग
أَخَاهُ قَالَ إِنِّي أَنَا أَخُوكَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٦٩﴾							
69	वह करते थे	उस पर जो	सो तू ग़मगीन न हो	मैं तेरा भाई	वेशक मैं	उस ने कहा	अपना भाई

فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَّازِهِمْ جَعَلَ السَّقَايَةَ فِي رَحْلِ أَخِيهِ							
अपना भाई	सामान	में	पीने का प्याला	रख दिया	उन का सामान	उन्हें तैयार कर दिया	फिर जब
ثُمَّ أَذَّنَ مُؤَذِّنٌ أَيُّهَا الْعِزْرُ إِنَّكُمْ لَسْرِفُونَ ﴿٧٠﴾							
70	अलबत्ता चोर हो	बेशक तुम	ऐ काफ़ले वालो	सुनादी करने वाला	एलान किया	फिर	
قَالُوا وَأَقْبَلُوا عَلَيْهِمْ مَاذَا تَفْقِدُونَ ﴿٧١﴾ قَالُوا نَفَقْدُ صَوَاعَ							
पैमाना	हम गुम कर बैठे (नहीं पाते)	उन्होंने ने कहा	71	तुम गुम कर बैठे	क्या है जो	उन की तरफ़	और उन्होंने ने मुँह किया
الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَاءَ بِهِ حِمْلُ بَعِيرٍ وَأَنَا بِهِ زَعِيمٌ ﴿٧٢﴾							
72	ज़ामिन	उस का	और मैं	एक ऊंट	बोझ	जो वह लाए	और उस के लिए
قَالُوا تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِي الْأَرْضِ							
ज़मीन (मुल्क) में	कि हम फ़साद करें	हम नहीं आए	तुम खूब जानते हो	अल्लाह की कसम	वह बोले		
وَمَا كُنَّا سَرِقِينَ ﴿٧٣﴾ قَالُوا فَمَا جَزَاؤُهُ إِنْ كُنْتُمْ كَذِبِينَ ﴿٧٤﴾							
74	झूटे	तुम हो	अगर	सज़ा उस की	फिर क्या	उन्होंने ने कहा	73
قَالُوا جَزَاؤُهُ مَنْ وُجِدَ فِي رَحْلِهِ فَهُوَ جَزَاؤُهُ كَذَلِكَ نَجْزِي							
हम सज़ा देते हैं	उसी तरह	उस का बदला	पस वही	उस के सामान में	पाया जाए	जो - जिस	उस कि सज़ा
الظَّالِمِينَ ﴿٧٥﴾ فَبَدَأَ بِأَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ وِعَاءِ أَخِيهِ ثُمَّ							
फिर	अपना भाई	ख़रजी (बोरा)	पहले	उन की ख़रजियों (बोरों) से	पस शुरू किया	75	ज़ालिमों को
اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِعَاءِ أَخِيهِ كَذَلِكَ كِدْنَا لِيُوسُفَ مَا كَانَ							
न था	यूसुफ़ के लिए	हम ने तदबीर की	इसी तरह	अपना भाई	बोरा	से	उस को निकाला
لِيَأْخُذَ أَخَاهُ فِي دِينِ الْمَلِكِ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ نَرْفَعُ							
हम बुलन्द करते हैं	अल्लाह चाहे	यह कि	मगर	बादशाह का दीन	में	अपना भाई	वह ले सकता
دَرَجَتٍ مِّنْ نَّشَأٍ وَفَوْقَ كُلِّ ذِي عِلْمٍ عَلِيمٌ ﴿٧٦﴾ قَالُوا إِنْ							
अगर	बोले	76	एक इल्म वाला	साहबे इल्म	हर	और ऊपर	चाहें हम
يَسْرِقُ فَقَدْ سَرَقَ أَخٌ لَهُ مِنْ قَبْلُ فَأَسْرَهَا يُوسُفُ فِي نَفْسِهِ							
अपने दिल में	यूसुफ़ (अ)	पस उसे छुपाया	उस से कब्ल	उस का भाई	तो चोरी की थी	उस ने चुराया	
وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ قَالَ أَنْتُمْ شَرُّ مَّكَانٍ وَاللّٰهُ أَعْلَمُ							
खूब जानता है	और अल्लाह	दरजे में	बदतर	तुम	कहा	उन पर	और वह ज़ाहिर न किया
بِمَا تَصِفُونَ ﴿٧٧﴾ قَالُوا يَٰأَيُّهَا الْعَزِيزُ إِنَّ لَهُ أَبًا شَيْخًا							
बूढ़ा	बाप	उस का	बेशक	अज़ीज़	ऐ	कहने लगे	77
كَبِيرًا فَخُذْ أَحَدَنَا مَكَانَهُ إِنَّا نَرُكَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٧٨﴾							
78	एहसान करने वाले	से	हम देखते हैं बेशक तुझे	उस की जगह	हम में से एक	पस ले (रख ले)	बड़ी उम्र का

फिर जब उन का सामान तैयार कर दिया अपने भाई के सामान में (पानी) पीने का प्याला रखदिया, फिर एक मुनादी करने वाले न एलान किया ऐ काफ़ले वालो! तुम अलबत्ता चोर हो। (70)

वह उन की तरफ़ मुँह कर के बोले, क्या है जो तुम गुम कर बैठे हो? (71)

उन्होंने ने कहा, हम बादशाह का पैमाना नहीं पाते, और जो कोई वह लाएगा उस के लिए एक ऊंट का बोझ है (बारे शुतुर मिलेगा) और मैं उस का ज़ामिन हूँ। (72)

वह बोले अल्लाह की कसम! तुम खूब जानते हो हम (इस लिए) नहीं आए कि मुल्क में फ़साद करें, और हम चोर नहीं। (73)

फिर उन्होंने ने कहा अगर तुम झूटे हो (झूटे निकले) फिर उस की क्या सज़ा है? (74)

कहने लगे उस की सज़ा यह है कि पाया जाए जिस के सामान में पस वही है उस का बदला, उस तरह हम ज़ालिमों को सज़ा देते हैं। (75)

पस उन की बोरों से (तलाश करना) शुरू किया अपने भाई के बोरे से पहले, फिर उस को अपने भाई के बोरे से निकाल लिया। इसी तरह हम ने यूसुफ़ (अ) के लिए तदबीर की वह बादशाह के दीन में (क़ानून के मुताबिक) अपने भाई को न ले सकता था मगर यह कि अल्लाह चाहे (अल्लाह की मशियत हो) हम दरजे बुलन्द करते हैं जिस के हम चाहें, और हर साहबे इल्म के ऊपर एक इल्म वाला है। (76)

बोले अगर उस ने चुराया तो चोरी कि थी उस से कब्ल उस के भाई ने, पस यूसुफ़ (अ) ने (उस बात को) अपने दिल में छुपाया और उन पर ज़ाहिर न किया, कहा तुम बदतर दरजे में हो और तुम जो बयान करते हो अल्लाह खूब जानता है। (77)

कहने लगे, ऐ अज़ीज़! बेशक उस का बाप बड़ी उम्र का बूढ़ा है, पस उस की जगह हम में से एक को रख ले, हम देखते हैं कि तू एहसान करने वालों में से है। (78)

उस ने कहा अल्लाह की पनाह कि उसके सिवा हम (किसी और) को पकड़ें, जिस के पास हम ने अपना सामान पाया (उस सूरत में) हम ज़ालिमों से होंगे, (79)

फिर जब वह उस से मायूस हो गए तो मशवरा करने के लिए अकेले हो बैठे, उन के बड़े (भाई) ने कहा, क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे बाप ने तुम से अल्लाह का पुख्ता अ़हद लिया, और उस से क़ब्ल तुम ने यूसुफ़ (अ) के बारे में तक्सीर की, पस मैं हरगिज़ न टलूंगा ज़मीन से (यहां से), यहां तक के मेरा बाप मुझे इजाज़त दे या अल्लाह मेरे लिए कोई तदवीर निकाले, और वह सब से बेहतर फैसला करने वाला है। (80)

अपने बाप के पास लौट जाओ, पस कहो ऐ हमारे बाप! तुम्हारे बेटे ने चोरी की और हम ने गवाही नहीं दी थी (सिर्फ वही कहा था) जो हमें मालूम था, और हम ग़ैब के निगहवान (वाख़वर) न थे। (81)

और पृछ लें उस वस्ति से जिस में हम थे, और उस काफ़ले से जिस में हम आए हैं, और वेशक हम सच्चे हैं। (82)

उस ने कहा (नहीं) बल्कि तुम्हारे दिल ने बना ली है एक बात, पस सब्र ही अच्छा है, शायद अल्लाह उन सब को मेरे पास ले आए, वेशक वह जानने वाला है, हिक्मत वाला है। (83)

और उन से मुँह फेर लिया और कहा हाए अफ़सोस! यूसुफ़ (अ) पर, और उस की आँखें सफ़ेद हो गईं ग़म से, पस वह घुट रहा था (ग़म ज़व्त कर रहा था)। (84)

वह बोले अल्लाह की क़सम! तुम हमेशा यूसुफ़ (अ) को याद करते रहोगे यहां तक कि तुम हो जाओ बीमार या हलाक हो जाओ। (85)

उस ने कहा मैं तो अपनी बेकरारी और अपना ग़म बयान करता हूँ सिर्फ़ अल्लाह के सामने और अल्लाह (की तरफ़) से जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। (86)

قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ أَنْ نَأْخُذَ إِلَّا مَنْ وَجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَهُ ۖ							
उस के पास	अपना सामान	हम ने पाया	जिस को	सिवाए	हम पकड़ें	कि	अल्लाह की पनाह
उस ने कहा							
إِنَّا إِذَا لَظَلِمُونَ ﴿٧٩﴾ فَلَمَّا اسْتَيْسَسُوا مِنْهُ خَلَصُوا نَجِيًّا ۖ							
मशवरा किया	अकेले हो बैठे	उस से	वह मायूस हो गए	फिर जब	79	अलबत्ता ज़ालिमों से	वेशक हम जब
قَالَ كَبِيرُهُمْ أَلَمْ تَعْلَمُوا أَنَّ أَبَاكُمْ قَدْ أَخَذَ عَلَيْكُمْ							
तुम से	लिया है	तुम्हारा बाप	कि	क्या तुम नहीं जानते	उन का बड़ा	कहा	
مَوْثِقًا مِنَ اللَّهِ وَمِنْ قَبْلُ مَا فَرَّطْتُمْ فِي يُوسُفَ ۖ فَلَنْ							
पस हरगिज़ न	यूसुफ़ (अ)	बारे में	जो तक्सीर की तुम ने	और उस से क़ब्ल	अल्लाह से (का)	पुख्ता अ़हद	
أَبْرَحَ الْأَرْضَ حَتَّىٰ يَأْذَنَ لِيَ أَبِي أَوْ يَحْكُمَ اللَّهُ لِيَ ۖ وَهُوَ							
और वह	हुक्म दे (तदवीर निकाले) अल्लाह मेरे लिए	या	मेरा बाप	मुझे	इजाज़त दे	यहां तक	ज़मीन टलूंगा
خَيْرُ الْحَكَمِينَ ﴿٨٠﴾ ارْجِعُوا إِلَىٰ أَبِيكُمْ فَقُولُوا يَا أَبَانَا إِنَّ							
वेशक	ऐ हमारे बाप	पस कहो	अपना बाप	तरफ़ (पास)	लौट जाओ तुम	80	सब से बेहतर फैसला करने वाला
ابْنَكَ سَرَقَ ۖ وَمَا شَهِدْنَا إِلَّا بِمَا عَلِمْنَا وَمَا كُنَّا							
और हम न थे	हमें मालूम था	जो	मगर	और नहीं गवाही दी हम ने	चोरी की	तुम्हारा बेटा	
لِلْغَيْبِ حَفِظِينَ ﴿٨١﴾ وَسَأَلَ الْقَرْيَةَ الَّتِي كُنَّا فِيهَا							
उस में	हम थे	जो - जिस	बस्ती	और पूछ लें	81	निगहवान	ग़ैब के
وَالْعِيرَ الَّتِي أَقْبَلْنَا فِيهَا ۖ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴿٨٢﴾ قَالَ بَلْ							
बल्कि	उस ने कहा	82	सच्चे	और वेशक हम	उस में	हम आए	जो - जिस और काफ़ला
سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا ۖ فَصَبْرٌ جَمِيلٌ ۚ عَسَىٰ اللَّهُ							
अल्लाह	शायद	अच्छा	पस सब्र	एक बात	तुम्हारा दिल	तुम्हारे लिए	बना ली है
أَنْ يَأْتِيَنِي بِهِمْ جَمِيعًا ۚ إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ﴿٨٣﴾ وَتَوَلَّىٰ							
और मुँह फेर लिया	83	हिक्मत वाला	जानने वाला	वह	वेशक वह	सब को	उन्हें कि मेरे पास ले आए
عَنْهُمْ وَقَالَ يَا سَفَىٰ عَلَىٰ يُوسُفَ ۖ وَابْيَضَّتْ عَيْنُهُ مِنْ							
से	उस की आँखें	और सफ़ेद हो गईं	यूसुफ़ (अ)	पर	हाए अफ़सोस	और कहा	उन से
الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيمٌ ﴿٨٤﴾ قَالُوا تَاللَّهِ تَفْتَوْا تَذْكُرُ يُوسُفَ حَتَّىٰ							
यहां तक कि	यूसुफ़ (अ)	याद करता	तू हमेशा रहेगा	अल्लाह की क़सम	वह बोले	84	घुट रहा था पस वह ग़म
تَكُونُ حَرَضًا أَوْ تَكُونُ مِنَ الْهَالِكِينَ ﴿٨٥﴾ قَالَ إِنَّمَا أَشْكُوا							
बयान करता हूँ	मैं तो सिर्फ़	उस ने कहा	85	हलाक होने वाले	से	या हो जाओ	बीमार तुम हो जाओ
بَثْنِي وَحُزْنِي إِلَىٰ اللَّهِ وَأَعْلَمَ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٨٦﴾							
86	तुम नहीं जानते	जो	अल्लाह से	और जानता हूँ	अल्लाह	तरफ़ सामने	और अपना ग़म अपनी बेकरारी

يَبْنِي أَذْهَبُوا فَتَحَسَّسُوا مِنْ يُوسُفَ وَأَخِيهِ وَلَا تَأْيَسُوا							
और न मायूस हो	और उस का भाई	यूसुफ (अ)	से (का)	पस खोज निकालो	तुम जाओ	ऐ मेरे बेटो	
مِنْ رَّوْحِ اللَّهِ إِنَّهُ لَا يَأْتِيَنَّكَ مِنْ رَّوْحِ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ							
लोग	मगर	अल्लाह की रहमत	से	मायूस नहीं होते	वेशक वह	अल्लाह की रहमत	से
الْكَافِرُونَ ﴿٨٧﴾ فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَيْهِ قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ مَسَّنَا							
हमें पहुँची	अज़ीज़	ऐ	उन्होंने ने कहा	उस पर - सामने	वह दाखिल हुए	फिर जब	87 काफ़िर (जमा)
وَأَهْلَنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعٍ مُزْجَاةٍ فَأَوْفَ لَنَا الْكَيْلَ							
नाप (गुल्ला)	हमें	पस पूरी दें	निकम्मी (नाकिस)	पूँजी के साथ (ले कर)	और हम आए	सख्ती	और हमारे घर
وَتَصَدَّقَ عَلَيْنَا إِنَّ اللَّهَ يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِينَ ﴿٨٨﴾ قَالَ							
कहा	88	सदका करने वाले	जज़ा देता है	वेशक अल्लाह	हम पर (हमें)	सदका करें	
هَلْ عَلِمْتُمْ مَا فَعَلْتُمْ بِيُوسُفَ وَأَخِيهِ إِذْ أَنْتُمْ جَاهِلُونَ ﴿٨٩﴾							
89	नादान	जब तुम	और उस का भाई	यूसुफ (अ) के साथ	क्या तुम ने किया है?	क्या तुम्हें ख़बर है	
قَالُوا إِنَّكَ لَأَنْتَ يُوسُفُ قَالَ أَنَا يُوسُفُ وَهَذَا أَخِي							
मेरा भाई	और यह	मैं यूसुफ (अ)	उस ने कहा	यूसुफ (अ)	तुम ही	क्या तुम ही	वह बोले
قَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا إِنَّهُ مَنْ يَتَّقِ وَيَصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ							
तो वेशक अल्लाह	और सब्र करता है	जो डरता है	वेशक वह	हम पर	अल्लाह	अलबत्ता एहसान किया है	
لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٩٠﴾ قَالُوا تَاللَّهِ لَقَدْ أَثَرَكَ							
तुझे पसन्द किया (फज़ीलत दी)	अल्लाह की क़सम	कहने लगे	90	नेकी करने वाले	अजर	ज़ाए नहीं करता	
اللَّهُ عَلَيْنَا وَإِنْ كُنَّا لَخَطِئِينَ ﴿٩١﴾ قَالَ لَا تَثْرِبَ عَلَيْكُمْ							
तुम पर	मलामत नहीं	उस ने कहा	91	ख़ताकार	हम थे	और वेशक	हम पर अल्लाह
الْيَوْمَ يَغْفِرُ اللَّهُ لَكُمْ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّحِمِينَ ﴿٩٢﴾ إِذْهَبُوا							
तुम जाओ	92	मेहरबानी करने वाले	सब से ज़ियादा मेहरबान	और वह	तुम को	अल्लाह	बख़्शे आज
بِقَمِيصِي هَذَا فَالْقُوهُ عَلَى وَجْهِ أَبِي يَأْتِ بَصِيرًا							
वीना हो कर	आएगा	मेरे बाप	चेहरा	पर	पस उस को डालो	यह	मेरी कमीस ले कर
وَأُتُونِي بِأَهْلِكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٩٣﴾ وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيرُ							
काफ़ला	जुदा जुदा (रवाना हुआ)	और जब	93	तमाम (सारे)	अपने घर वालों को	और मेरे पास आओ (ले आओ)	
قَالَ أَبُوهُمْ إِنِّي لَأَجِدُ رِيحَ يُوسُفَ لَوْلَا أَنْ							
कि	अगर न	यूसुफ	हवा (खुशबू)	अलबत्ता पाता हूँ	वेशक मैं	उन का बाप	कहा
تُفَنِّدُونَ ﴿٩٤﴾ قَالُوا تَاللَّهِ إِنَّكَ لَفِي ضَلَالِكَ الْقَدِيمِ ﴿٩٥﴾							
95	पुराना	अपना वहम	में	वेशक तू	अल्लाह की क़सम	वह कहने लगे	94 मुझे वहक गया जानो

ऐ मेरे बेटो! तुम जाओ पस खोज निकालो यूसुफ (अ) का और उस के भाई का, और अल्लाह की रहमत से मायूस न हो, वेशक अल्लाह की रहमत से मायूस नहीं होते मगर काफ़िर लोग। (87)

फिर जब वह उस के सामने दाखिल हुए उन्होंने ने कहा ऐ अज़ीज़! हमें और हमारे घर को पहुँची है सख्ती, और हम नाकिस पूँजी ले कर आए हैं, हमें पूरा नाप (गुल्ला) दें, और हम पर सदका करें, वेशक अल्लाह सदका करने वालों को जज़ा देता है। (88)

(यूसुफ अ) ने कहा क्या तुम्हें खबर है? तुम ने यूसुफ (अ) और उस के भाई के साथ क्या (सुलूक) किया? जब तुम नादान थे। (89)

वह बोले क्या तुम ही यूसुफ (अ) हो? उस ने कहा मैं यूसुफ (अ) हूँ और यह मेरा भाई है, अल्लाह ने अलबत्ता हम पर एहसान किया है, वेशक जो डरता है और सब्र करता है तो वेशक अल्लाह ज़ाया नहीं करता नेकी करने वालों का अजर। (90)

कहने लगे अल्लाह की क़सम! अल्लाह ने तुझे हम पर फज़ीलत दी है और हम वेशक ख़ताकार थे। (91)

उस ने कहा आज तुम पर कोई मलामत (इल्ज़ाम) नहीं, अल्लाह तुम्हें बख़्शे, वह सब से ज़ियादा मेहरबान है मेहरबानी करने वालों में। (92)

तुम मेरी यह कमीज़ ले कर जाओ पस उस को मेरे बाप के चहरे पर डालो, वह बीना हो जाएंगे, और मेरे पास अपने तमाम घर वालों को ले आओ। (93)

और जब काफ़ला रवाना हुआ उन के बाप ने कहा, वेशक मैं यूसुफ (अ) की खुशबू पा रहा हूँ अगर न जानो (न कहो) कि बूढ़ा वहक गया है। (94)

वह कहने लगे अल्लाह की क़सम! वेशक तू अपने पुराने वहम में है। (95)

फिर जब खुशखबरी देने वाला आया और उस ने कुर्ता उस (याकूब अ) के मुँह पर डाला तो वह लौट कर देखने वाला (बीना) हो गया, बोला क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था? कि मैं अल्लाह की तरफ़ से जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। (96)

वह बोले ऐ हमारे बाप! हमारे लिए बख़्शीश मांगिए हमारे गुनाहों की, वेशक हम ख़ताकार थे। (97)

उस ने कहा मैं जल्द अपने रब से तुम्हारे गुनाहों की बख़्शीश मांगूंगा, वेशक वह बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (98)

फिर जब वह यूसुफ़ (अ) के पास दाख़िल हुए तो उस ने अपने माँ बाप को अपने पास ठिकाना दिया, और कहा अगर अल्लाह चाहे तो तुम मिस्र में दिलजमई के साथ दाख़िल हो। (99)

और अपने माँ बाप को तख़्त पर ऊँचा बिठाया, और वह उस के आगे गिरगए सिज्दे में और उस ने कहा ऐ मेरे अब्बा! यह है मेरे उस से पहले ख़्वाब की ताबीर, उस को मेरे रब ने सच्चा कर दिया, और वेशक उस ने मुझे पर एहसान किया जब मुझे कैद खाने से निकाला, और तुम सब को गाऊँ से ले आया उस के बाद कि मेरे और मेरे भाइयों के दरमियान शैतान ने झगड़ा (फ़साद) डाल दिया था, वेशक मेरा रब जिस के लिए चाहे उमदा तदवीर करने वाला है, वेशक वह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (100)

ऐ मेरे रब! तू ने मुझे एक मुल्क अता किया और मुझे सिखाया बातों का अन्जाम (ख़्वाबों की ताबीर) निकालना, ऐ आस्मानों और ज़मीन के पैदा करने वाला! तू मेरा कारसाज़ है दुनिया में और आख़िरत में, मुझे (दुनिया से) फ़रमावरदारी की हालत में उठाना और मुझे नेक बन्दों के साथ मिलाना। (101)

यह ग़ैब की ख़बरों में से है जो हम तुम्हारी तरफ़ वहि करते हैं और तुम उन के पास न थे जब उन्होंने ने अपना काम पुख़्ता किया और वह चाल चल रहे थे। (102)

فَلَمَّا أَنْ جَاءَ الْبَشِيرُ أَلْقَاهُ عَلَى وَجْهِهِ فَارْتَدَّ بَصِيرًا ۚ								
देखने वाला	तो लौट कर होगया	उस का मुँह	पर	उस ने वह (कुर्ता) डाला	खुशखबरी देने वाला	आया	कि	फिर जब
(96) قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَّكُمْ إِنِّي أَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ								
96	तुम नहीं जानते	जो	अल्लाह (तरफ) से	वेशक मैं जानता हूँ	तुम से	क्या मैं ने नहीं कहा था		बोला
(97) قَالُوا يَا أَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا إِنَّا كُنَّا خُطِئِينَ								
97	ख़ताकार (जमा)	थे	वेशक हम	हमारे गुनाह	हमारे लिए बख़्शीश मांग	ऐ हमारे बाप		वह बोले
(98) قَالَ سَوْفَ أَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّي إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ								
98	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	वह	वेशक वह	अपना रब	तुम्हारे लिए मैं बख़्शीश मांगूंगा	जल्द	उस ने कहा
فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَى يُوسُفَ أَوَىٰ إِلَيْهِ أَبَوَاهُ وَقَالَ ادْخُلُوا مِصْرَ إِن شَاءَ اللَّهُ آمِنِينَ ۙ								
(99) وَرَفَعَ أَبَوَاهُ عَلَى الْعَرْشِ								
तख़्त	पर	अपने माँ बाप	और ऊँचा बिठाया	99	अमन (दिलजमई) के साथ	अल्लाह ने चाहा	अगर	मिस्र
وَحَرُّوْا لَهُ سَجْدًا ۖ وَقَالَ يَٰأَبَتِ هَٰذَا تَاوِيلُ رُءْيَايَ								
मेरा ख़्वाब	ताबीर	यह	ऐ मेरे अब्बा	और उस ने कहा	सिज्दे में	उस के लिए (आगे)	और वह गिरगए	
مِنْ قَبْلُ ۚ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّي حَقًّا ۖ وَقَدْ أَحْسَنَ بِي إِذْ أَخْرَجَنِي								
मुझे निकाला	जब	मुझे पर	और वेशक उस ने एहसान किया	सच्चा	मेरा रब	उस को कर दिया	उस से पहले	
مِنَ السِّجْنِ ۖ وَجَاءَ بِكُمْ مِنَ الْبَدْوِ مِنْ بَعْدِ أَنْ نَزَغَ								
झगड़ा डाल दिया	कि	उस के बाद	गाऊँ	से	तुम सब को	और ले आया	कैद खाना	से
الشَّيْطَانُ بَيْنِي وَبَيْنَ إِخْوَتِي ۚ إِنَّ رَبِّي لَطِيفٌ لِّمَا يَشَاءُ ۚ								
जिस के लिए चाहे	उमदा तदवीर करता है	मेरा रब	वेशक	और मेरे भाइयों के दरमियान	मेरे दरमियान	शैतान		
إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۙ (100) رَبِّ قَدْ آتَيْتَنِي مِنَ الْمُلْكِ								
मुल्क	से - एक	तू ने मुझे अता किया	ऐ मेरे रब	100	हिक्मत वाला	जानने वाला	वह	वेशक वह
وَعَلَّمْتَنِي مِنْ تَاوِيلِ الْأَحَادِيثِ ۖ فَاطِرَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۚ								
और ज़मीन	आस्मान (जमा)	पैदा करने वाला	बातें (ख़्वाब)	अन्जाम निकालना (ताबीर)	से	और मुझे सिखाया		
أَنْتَ وَلِيٌّ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۖ تَوَفَّنِي مُسْلِمًا ۖ وَأَلْحَقْنِي								
और मुझे मिला	फ़रमावरदारी की हालत में	मुझे उठा	और आख़िरत	दुनिया में	मेरा कारसाज़	तू		
(101) بِالصَّالِحِينَ ۙ ذَٰلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهِ إِلَيْكَ ۚ								
तुम्हारी तरफ़	हम वहि करते हैं	ग़ैब की ख़बरें	से	यह	101	सालेह (नेक बन्दों) के साथ		
(102) وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ أَجْمَعُوا أَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُونَ								
102	चाल चल रहे थे	और वह	अपना काम	उन्होंने ने जमा किया (पुख़्ता किया)	जब	उन के पास	और तुम न थे	

११
ع
५وَقَالَ النَّبِيُّ
۝

وَمَا أَكْثَرَ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِينَ ﴿١٠٣﴾ وَمَا تَسْأَلُهُمْ عَلَيْهِ							
और नहीं	अक्सर लोग	अगरचे	तुम चाहो	ईमान लाने वाले	103	और तुम नहीं मांगते उन से	उस पर
مِّنْ أَجْرٍ إِن هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ﴿١٠٤﴾ وَكَأَيِّن مِّنْ آيَةٍ							
कोई अजर	यह नहीं	मगर	नसीहत	सारे जहानों के लिए	104	और कितनी ही	निशानियां
فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ يَمُرُّونَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُونَ ﴿١٠٥﴾							
आस्मानों में	और ज़मीन	वह गुज़रते हैं	उन पर	लेकिन वह	उन से	मुँह फेरने वाले	105
وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُمْ بِاللَّهِ إِلَّا وَهُمْ مُّشْرِكُونَ ﴿١٠٦﴾ أَفَأَمِنُوا							
और ईमान नहीं लाते	उन में अक्सर	अल्लाह पर	मगर	और वह	मुशरिक (जमा)	106	पस किया वह बेखौफ हो गए
أَن تَأْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ عَذَابِ اللَّهِ أَوْ تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً							
कि उन पर आए	छा जाने वाली (आफ़त)	से	अल्लाह का अज़ाब	या	उन पर आजाए	घड़ी (क़ियामत)	अचानक
وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿١٠٧﴾ قُلْ هَذِهِ سَبِيلِي أَدْعُو إِلَى اللَّهِ							
और वह	उन्हें ख़बर न हो	107	आप कह दें	यह	मेरा रास्ता	मैं बुलाता हूँ	अल्लाह की तरफ़
عَلَىٰ بَصِيرَةٍ أَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِي وَسُبْحَنَ اللَّهِ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٠٨﴾							
दानाई पर (समझ)	मैं	और जो-जिस	मेरी पैरवी की	और अल्लाह	और मैं नहीं	से	मुशरिक (जमा)
وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُّوحِي إِلَيْهِمْ مِنْ أَهْلِ الْقُرَىٰ							
और हम ने नहीं भेजा	तुम से पहले	मगर-सिर्फ़	मर्द	हम वही भेजते थे	उन की तरफ़	से	वसतियों वाले
أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ							
क्या पस उन्होंने ने सैर नहीं की	ज़मीन (मुल्क) में	पस वह देखते	कैसा - क्या	हुआ	अनज़ाम	वह लोग जो	
مِّن قَبْلِهِمْ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ اتَّقَوْا أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٠٩﴾							
उन से पहले	और अलबत्ता आखिरत का घर	वेहतर	उन के लिए जो	जिन्होंने ने परहेज़ किया	पस क्या तुम समझते नहीं	109	
حَتَّىٰ إِذَا اسْتَيْسَسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوا جَاءَهُمْ							
यहां तक	जब	मायूस होने लगे	रसूल (जमा)	और उन्होंने ने गुमान किया	कि वह	उन से झूट कहा गया	उन के पास आई
نَصْرُنَا فَنَجَّىٰ مَن نَّشَاءُ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ ﴿١١٠﴾							
हमारी मदद	पस बचा दिए गए	हम ने जिन्हें चाहा	और नहीं फेरा जाता	हमारा अज़ाब	से	कौम	मुजरिम (जमा)
لَقَدْ كَانَ فِي قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لَّلأُولَى الْأَلْبَابِ مَا كَانَ							
अलबत्ता	है	में	उन के किस्से	इव्रत (नसीहत)	अक्लमन्दों के लिए	नहीं है	
حَدِيثًا يُفْتَرَىٰ وَلَٰكِن تَصْدِيقَ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ							
वात	बनाई हुई	और लेकिन (बल्कि)	तसदीक	वह जो	उस से (अपने से) पहली		
وَتَفْصِيلَ كُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّلْقَوْمِ يُؤْمِنُونَ ﴿١١١﴾							
और तफ़सील (बयान)	हर बात	और हिदायत	और रहमत	लोगों के लिए	जो ईमान लाते हैं	111	

१२
ع
६

अगरचे तुम (कितना ही) चाहो और अक्सर लोग ईमान लाने वाले नहीं। (103)

और तुम उन से उस पर कोई अजर नहीं मांगते, यह (और कुछ) नहीं, सारे जहानों के लिए नसीहत है। (104)

और आस्मानों में और ज़मीन में कितनी ही निशानियां हैं वह उन पर गुज़रते हैं, लेकिन वह उन से मुँह फेरने वाले हैं। (105)

और उन में से अक्सर अल्लाह पर ईमान नहीं लाते मगर वह मुशरिक हैं। (106)

पस किया वह (उस से) बेखौफ हो गए कि उन पर अल्लाह के अज़ाब की आफ़त आजाए, या उन पर आजाए अचानक क़ियामत, और उन्हें ख़बर (भी) न हो। (107)

आप (स) कह दें यह मेरा रास्ता है, मैं अल्लाह की तरफ़ बुलाता हूँ, समझ बूझ के मुताबिक़, मैं (भी) और वह (भी) जिस ने मेरी पैरवी की, और अल्लाह पाक है, और मैं मुशरिकों में से नहीं। (108)

और हम ने तुम से पहले वसतियों में रहने वाले लोगों में से सिर्फ़ मर्द (नबी) भेजे जिन की तरफ़ हम वही भजते थे, पस क्या उन्होंने ने सैर नहीं की मुल्क में? कि वह देखते उन से पहले लोगों का अनज़ाम क्या हुआ? और अलबत्ता आखिरत का घर उन लोगों के लिए वेहतर है जिन्होंने ने परहेज़ किया, पस क्या तुम नहीं समझते? (109)

यहां तक कि जब (ज़ाहिरी असबाब से) रसूल मायूस होने लगे और उन्होंने ने गुमान किया कि उन से झूट कहा गया था, उन के पास हमारी मदद आगई, पस जिन्हें हम ने चाहा वह बचा दिए गए और हमारा अज़ाब नहीं फेरा जाता मुजरिमों की कौम से। (110)

अलबत्ता उन के किस्सों में अक्लमन्दों के लिए इव्रत है यह बनाई हुई बात नहीं, बल्कि तसदीक है अपने से पहलों की, और बयान है हर बात का, और हिदायत ओ रहमत है उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं। (111)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, रहम करने वाला है

अलिफ-लाम-मीम-रा - यह किताब (कुरआन) की आयतें हैं, और जो तुम्हारे रब की तरफ से तुम्हारी तरफ उतारा गया हक है, मगर अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (1) अल्लाह जिस ने आस्मानों को बुलन्द किया किसी सुतून (सहारे) के बगैर तुम देखते हो उसे, फिर अर्श पर करार पकड़ा, और सूरज और चाँद को मुख़्ख़र किया (काम पर लगाया) हर एक चलता है एक मुदत मुकर्ररा तक, अल्लाह काम की तदवीर करता है, वह निशानियां बयान करता है ताकि तुम अपने रब से मिलने का यकीन कर लो। (2)

और वही है जिस ने ज़मीन को फैलाया, और उस में पहाड़ बनाए और नहरें (चलाई) और हर किस्म के फल (पैदा किए) और उस में दो, दो किस्म के (तलख़ ओ शिरीन) फल बनाए, और वह दिन को रात से ढांपता है, बेशक उस में निशानियां हैं ग़ौर ओ फ़िक्र करने वाले लोगों के लिए। (3)

और ज़मीन में पास पास क़त्आत हैं, और बागात हैं अंगूरों के, और खेतियां और खजूर एक जड़ से दो शाखों वाली और बगैर दो शाखों की, एक ही पानी से (हालाकि) सैराब की जाती है, और हम बेहतर बना देते हैं उन में से एक को दूसरे पर ज़ाइके में, इस में निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो अक्ल से काम लेते हैं। (4)

और अगर तुम तअज़्जुब करो तो उन का यह कहना अज़ब है: जब हम मिट्टी हो गए क्या हम (अज़ सरे नौ) नई ज़िन्दगी पाएंगे? वही लोग हैं जो अपने रब के मुन्किर हुए, और वही हैं जिन की गर्दनो में तौक होंगे, और वही दोज़ख़ वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (5)

آيَاتُهَا ٤٣ ﴿١٣﴾ سُورَةُ الرَّعْدِ ﴿١٣﴾ رُكُوعَاتُهَا ٦									
रुक़आत 6				(13) सूरतुर रअद गरज			आयात 43		
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है									
الْمَرْءُ تِلْكَ آيَةُ الْكِتَابِ وَالَّذِي أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ الْحَقُّ									
हक्	तुम्हारे रब की तरफ से	तुम्हारी तरफ	उतारा गया	और वह जो कि	किताब	आयतें	यह	अलिफ लाम मीम रा	
وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١﴾ اللَّهُ الَّذِي رَفَعَ السَّمُوتِ									
आस्मान (जमा)	बुलन्द किया	वह जिस ने	अल्लाह	1	ईमान नहीं लाते	अक्सर लोग	और लेकिन (मगर)		
بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ									
और चाँद	सूरज	और काम पर लगाया	अर्श पर	करार पकड़ा	फिर	तुम उसे देखते हो	किसी सुतून के बगैर		
كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى يُدَبِّرُ الْأَمْرَ يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ									
ताकि तुम	निशानियां	वह बयान करता है	काम	तदवीर करता है	मुकर्ररा	एक मुदत	चलता है	हर एक	
بِلِقَاءِ رَبِّكُمْ تُوقِنُونَ ﴿٢﴾ وَهُوَ الَّذِي مَدَّ الْأَرْضَ وَجَعَلَ فِيهَا									
उस में	और बनाया	ज़मीन	फैलाया	वह - जिस	और वही	2	तुम यकीन कर लो	अपना रब	मिलने का
رَوَاسِيَ وَأَنْهَارًا وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ جَعَلَ فِيهَا زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ									
दो, दो किस्म	जोड़े	उस में	बनाया	हर एक फल (जमा)	और से	और नहरें	पहाड़ (जमा)		
يُعْشَى الْيَلِ النَّهَارُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٣﴾									
3	जो गौर ओ फ़िक्र करते हैं	लोगों के लिए	निशानियां	उस	में	बेशक	दिन	रात	वह ढांपता है
وَفِي الْأَرْضِ قِطْعٌ مُّتَجَوِّرَةٌ وَجَنَّتْ مِنْ أَعْنَابٍ وَزَرْعٌ وَنَخِيلٌ									
और खजूर	और खेतियां	अंगूर (जमा)	से - के	और बागात	पास पास	क़त्आत	ज़मीन	और में	
صِنَوَانٌ وَغَيْرُ صِنَوَانٍ يُسْقَى بِمَاءٍ وَاحِدٍ وَنُفِضِلُ بَعْضَهَا									
उन का एक	और हम फज़ीलत देते हैं	एक	पानी से	सैराब किया जाता है	दो शाखों वाली	और बगैर	एक जड़ से दो शाखों वाली		
عَلَىٰ بَعْضٍ فِي الْأُكُلِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٤﴾									
4	अक्ल से काम लेते हैं	लोगों के लिए	निशानियां	उस	में	बेशक	ज़ाइका	में	दूसरा पर
وَأَنْ تَعْجَبَ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ إِذَا كُنَّا ثَرْبًا عَائًا لَفِي خَلْقٍ									
ज़िन्दगी पाएंगे	क्या हम	मिट्टी	हो गए हम	क्या जब	उन का कहना	तो अज़ब	तुम तअज़्जुब करो	और अगर	
جَدِيدُهُ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ وَأُولَٰئِكَ الْأَغْلَلُ فِي									
में	तौक (जमा)	और वही है	अपने रब के	मुन्किर हुए	जो लोग	वही	नई		
أَعْنَاقِهِمْ وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٥﴾									
5	हमेशा रहेंगे	उस में	वह	दोज़ख़ वाले	और वही है	उन की गर्दनो			

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ							
से	और (हालांकि) गुज़र चुकी	भलाई (रहमत) से पहले	बुराई (अज़ाब)	और वह तुम से जल्दी मांगते हैं			
قَبْلِهِمُ الْمَثَلُ وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ لِلنَّاسِ عَلَى							
पर	लोगों के लिए	अलबत्ता मग़फ़िरत वाला	तुम्हारा रब	और वेशक	सज़ाएं	उन से क़व्ल	
ظَلَمِهِمْ وَإِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٦﴾ وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا							
जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)	और कहते हैं	6	अलबत्ता सख़्त अज़ाब देने वाला	तुम्हारा रब	और वेशक	उन का जुल्म	
لَوْلَا أَنْزَلَ عَلَيْهِ آيَةً مِنْ رَبِّهِ إِنَّمَا أَنْتَ مُنذِرٌ							
डराने वाले	तुम	उस के सिवा नहीं	उस का रब	से	कोई निशानी	उस पर	क्यों न उतरी
وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ﴿٧﴾ اللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ أُنْثَى وَمَا تَغِيصُ							
सुकड़ता है	और जो	हर मादा	जो पेट में रखती है	जानता है	अल्लाह	7	और हर कौम के लिए
الْأَرْحَامِ وَمَا تَزْدَادُ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ بِمِقْدَارٍ ﴿٨﴾ عِلْمُ الْغَيْبِ							
जानने वाला हर ग़ैब	8	एक अन्दाज़े से	उस के नज़्दीक	चीज़	और हर	बढ़ता है	और जो रहम (जमा)
وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيرِ الْمُتَعَالِ ﴿٩﴾ سَوَاءٌ مِنْكُمْ مَّن أَسَرَ الْقَوْلَ							
वात	आहिस्ता कहे	जो	तुम में	बराबर	9	बुलन्द मरतवा	और ज़ाहिर
وَمَنْ جَهَرَ بِهِ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍ بِاللَّيْلِ وَسَارِبٌ بِالنَّهَارِ ﴿١٠﴾							
10	दिन में	और चलने वाला	रात में	छुप रहा है	वह	और जो	पुकार कर - उस को और जो
لَهُ مُعَقِّبٌ مِّنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ يَحْفَظُونَهُ							
वह उसकी हिफाज़त करते हैं		और उस के पीछे		उस (इन्सान) के आगे से		उस के पहरेदार	
مِنْ أَمْرِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتَّى يُغَيِّرُوا مَا							
जो	वह बदल लें	यहां तक कि	किसी कौम के पास (अच्छी हालत)	जो	नहीं बदलता	अल्लाह वेशक	अल्लाह का हुक्म से
بِأَنفُسِهِمْ وَإِذَا أَرَادَ اللَّهُ بِقَوْمٍ سُوءًا فَلَا مَرَدَّ لَهُ وَمَا لَهُمْ							
उन के लिए	और नहीं	उस के लिए	तो नहीं फिरना	बुराई	किसी कौम से	इरादा करता है अल्लाह	और जब अपने दिलों में (अपनी हालत)
مِّنْ دُونِهِ مِنْ وَّالٍ ﴿١١﴾ هُوَ الَّذِي يُرِيكُم الْبَرْقَ خَوْفًا وَطَمَعًا							
उम्मीद दिलाने को	डराने को	विजली	तुम्हें दिखाता है	वह जो कि	वह	11	कोई मददगार उस के सिवा
وَيُنشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ﴿١٢﴾ وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهِ وَالْمَلَكُ							
और फ़रिश्ते	उस की तारीफ के साथ	गरज	और पाकीज़गी बयान करती है	12	बोझल	बादल	और उठाता है
مِّنْ خِيفَتِهِ وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيبُ بِهَا مَن							
जिस	उसे	फिर गिराता है	गरजने वाली विजलियां	और वह भेजता है	उस के डर से	से	
يَشَاءُ وَهُمْ يُجَادِلُونَ فِي اللَّهِ وَهُوَ شَدِيدُ الْمِحَالِ ﴿١٣﴾							
13	पकड़	सख़्त	और वह	अल्लाह (के वारे) में	झगड़ते हैं	और वह	वह चाहता है

और वह तुम से रहमत से पहले जल्द अज़ाब मांगते हैं, हालांकि गुज़र चुकी है उन से क़व्ल (इव्रत नाक) सज़ाएं, और वेशक तुम्हारा रब उनके जुल्म के बावजूद लोगों के लिए मग़फ़िरत वाला है, और वेशक तुम्हारा रब सख़्त अज़ाब देने वाला है। (6)

और काफ़िर कहते हैं उस के रब की तरफ़ से उस पर कोई निशानी क्यों न उतरी? उस के सिवा नहीं के तुम डराने वाले हो, और हर क़ौम के लिए हादी हुआ है। (7)

अल्लाह जानता है जो हर मादा पेट में रखती है और जो रहम में सुकड़ता और बढ़ता है, और उस के नज़्दीक हर चीज़ एक अन्दाज़े से है। (8)

जानने वाला है हर ग़ैब और ज़ाहिर का, सब से बड़ा, बुलन्द मरतवा है। (9)

(उस के लिए) बराबर है तुम में से जो आहिस्ता वात कहे और जो उस को पुकार कर कहे और जो रात में छुप रहा है और जो दिन में चलने (फिरने) वाला है। (10)

उस के पहरेदार हैं इन्सान के आगे से और उस के पीछे से, वह अल्लाह के हुक्म से उस की हिफ़ाज़त करते हैं, वेशक अल्लाह किसी क़ौम की अच्छी हालत नहीं बदलता यहां तक कि वह खुद अपनी हालत बदल लें, और जब अल्लाह किसी क़ौम से बुराई का इरादा करता है तो उस के लिए फिरना नहीं (वह टल नहीं सकती) और उन के लिए उस के सिवा कोई मददगार नहीं। (11)

वही है जो तुम्हें विजली दिखाता है डराने को और उम्मीद दिलाने को और उठाता है बोझल बादल। (12)

और गरज उस की तारीफ़ के साथ उस के डर से (उस की तस्वीह करते हैं) और वह गरजने वाली विजलियां भेजता है, फिर उन्हें जिस पर चाहता है गिराता है और वह (काफ़िर) अल्लाह के वारे में झगड़ते हैं और वह सख़्त पकड़ वाला है। (13)

उस को पुकारना हक है, और उस के सिवा वह जिन को पुकारते हैं वह उन्हें कुछ भी जवाब नहीं देते मगर जैसे (कोई) अपनी दोनों हथेलियां पानी की तरफ फैलादे ताकि (पानी) उस के मुंह तक पहुँच जाए, और वह उस तक हरगिज़ पहुँचने वाला नहीं, और काफ़िरों की पुकार गुमराही के सिवा कुछ नहीं। (14) और अल्लाह ही को सिज्दा करता है जो आस्मानों और ज़मीन में है, खुशी से या न खुशी से, और सुबह ओ शाम उन के साए (भी)। (15) आप (स) पूछें आस्मानों और ज़मीन का रब कौन है? कह दें, अल्लाह है, कह दें तो क्या तुम उस के सिवा बनाते हो हिमायती जो अपनी जानों के लिए (भी) बस नहीं रखते कुछ नफ़ा का और न नुक़सान का, कह दें क्या बराबर होता है अन्धा और देखने वाला? या क्या उजाला और अन्धेरे बराबर हो जाएंगे? क्या वह अल्लाह के लिए जो शरीक बनालेते हैं उन्होंने (मख़लूक) पैदा की है उस के पैदा करने की तरह? सो पैदाइश उन पर मुशतबह हो गई, कह दें अल्लाह हर शै का पैदा करने वाला है और वह यकता ग़ालिब है। (16) उस ने आस्मानों से पानी उतारा, सो नदी नाले अपने अपने अन्दाज़े से वह निकले, फिर उठा लाया (ऊपर ले आया) नाला फूला हुआ झाग, और जो आग में तपाते हैं ज़ेवर बनाने को या और असबाब बनाने को, (उस में भी) उस जैसा झाग (मैल) होता है, उसी तरह अल्लाह हक़ और बातिल को बयान करता है, सो झाग दूर हो जाता है (जाया हो जाता है) सूख कर, लेकिन जो लोगों को नफ़ा पहुँचाता है वह ज़मीन में ठहरा रहता है (बाकी रहता है) इसी तरह अल्लाह मिसालें बयान करता है। (17)

لَهُ دَعْوَةُ الْحَقِّ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْتَجِيبُونَ									
उस को	पुकारना	हक्	और जिन को	वह पुकारते हैं	उस के सिवा	वह जवाब नहीं देते			
لَهُمْ بِشَيْءٍ إِلَّا كَبَاسِطٍ كَفَّيْهِ إِلَى الْمَاءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ									
उन को	कुछ भी	मगर	जैसे फैला दे	अपनी हथेलियां	पानी की तरफ	ताकि पहुँच जाए	उस के मुँह तक	और नहीं	वह
بِبَالِغِهِ وَمَا دُعَاءُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَلٍ ﴿١٤﴾ وَلِلَّهِ يَسْجُدُ									
उस तक पहुँचने वाला	और नहीं	पुकार	काफिर (जमा)	सिवाए	में	गुमराही	14	और अल्लाह ही को सिज्दा करता है	और अल्लाह ही को
مَنْ فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا وَظِلَّلُهُمْ بِالْغُدُوِّ									
जो	में	आस्मानों	और ज़मीन	खुशी से	या नाखुशी से	और उन के साए	सुबह		
وَالْأَصَالِ ﴿١٥﴾ قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ قُلِ اللَّهُ									
और शाम	15	पूछें	कौन	आस्मानों का रब	और ज़मीन	कह दें	अल्लाह		
قُلْ أَفَاتَّخَذْتُمْ مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ لَا يَمْلِكُونَ أَنْفُسَهُمْ نَفْعًا									
कह दें	तो क्या तुम बनाते हो	उस के सिवा	हिमायती	वह बस नहीं रखते	अपनी जानों के लिए	कुछ नफ़ा			
وَلَا ضَرًّا قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ أَمْ هَلْ									
और न नुक़सान	कह दें	क्या	बराबर होता है	नाबीना (अन्धा)	और बीना (देखने वाला)	या	क्या		
تَسْتَوِي الظُّلُمَاتُ وَالنُّورُ أَمْ جَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ خَلَقُوا									
बराबर हो जाएगा	अन्धेरे (जमा)	और उजाला	क्या	वह बनाते हैं	अल्लाह के लिए	शरीक	उन्होंने ने पैदा किया है		
كَخَلَقَهُ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ قُلِ اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ									
उस के पैदा करने की तरह	तो मुशतबह होगई	पैदाइश	उन पर	कह दें	अल्लाह	पैदा करने वाला	हर शै		
وَهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿١٦﴾ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَالَتْ									
और वह	यकता	ज़बरदस्त (ग़ालिब)	16	उस ने उतारा	आस्मानों से	पानी	सो वह निकले		
أَوْدِيَةً بِقُدْرَتِهَا فَأَخْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَابِيًا وَمِمَّا									
नदी नाले	अपने अपने अन्दाज़े से	फिर उठा लाया	नाला	झाग	फूला हुआ	और उस से जो			
يُوقَدُونَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَاءَ حُلْيَةٍ أَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ									
तपाए है	उस पर	आग में	हासिल करने (बनाने) को	ज़ेवर	या	असबाब	झाग		
مِثْلُهُ كَذَلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ فَأَمَّا									
उसी जैसा	उसी तरह	बयान करता है	अल्लाह	हक्	और बातिल	सो			
الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَاءً وَأَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ									
झाग	दूर हो जाता है	सूख कर	और लेकिन	जो नफ़ा पहुँचाता है	लोग				
فَيَمْكُثُ فِي الْأَرْضِ كَذَلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ ﴿١٧﴾									
तो ठहरा रहता है	ज़मीन में	इसी तरह	बयान करता है	अल्लाह	मिसालें	17			

١
وَقَفَّيْنَا

٢
النَّصِ

لِلَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنَىٰ وَالَّذِينَ لَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُ لَوْ أَنَّ لَهُمْ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ ۗ أُولَٰئِكَ لَهُمْ سُوءُ الْحِسَابِ ۖ وَمَأْوَهُمُ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ الْمِهَادُ (١٨)	उन के लिए जिन्होंने	उन्होंने ने	अपने रब (का हुक्म)	भलाई	और जिन लोगों ने	न माना	उस का (हुक्म)	अगर	यह कि
وَأَنَّمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰ ۚ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولَٰؤِ الْأَلْبَابِ (١٩) الَّذِينَ يُؤْفُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَلَا يَنْقُضُونَ الْمِيثَاقَ (٢٠)	उन के लिए (उन का)	जो कुछ ज़मीन में	सब	और उस जैसा	उस के साथ	कि फ़िदये में दें	उस को	वही है	उन के लिए
وَأَنَّمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰ ۚ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولَٰؤِ الْأَلْبَابِ (١٩) الَّذِينَ يُؤْفُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَلَا يَنْقُضُونَ الْمِيثَاقَ (٢٠)	बुरा	हिसाब	और उन का ठिकाना	जहन्नम	और बुरा	विछाना (जगह)	18	पस क्या जो	जानता है
وَأَنَّمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰ ۚ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولَٰؤِ الْأَلْبَابِ (١٩) الَّذِينَ يُؤْفُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَلَا يَنْقُضُونَ الْمِيثَاقَ (٢٠)	कि जो	उतारा गया	तुम्हारी तरफ़	से	तुम्हारा रब	हक्	उस जैसा	वह	अन्धा
وَأَنَّمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰ ۚ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولَٰؤِ الْأَلْبَابِ (١٩) الَّذِينَ يُؤْفُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَلَا يَنْقُضُونَ الْمِيثَاقَ (٢٠)	अक्ल वाले	19	और वह जो कि	पूरा करते हैं	अल्लाह का अहद	और वह नहीं तोड़ते	20	पुख्ता कौल ओ इक़्रार	समझते हैं
وَأَنَّمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰ ۚ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولَٰؤِ الْأَلْبَابِ (١٩) الَّذِينَ يُؤْفُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَلَا يَنْقُضُونَ الْمِيثَاقَ (٢٠)	और वह जो कि	जोड़े रखते हैं	जो	अल्लाह ने हुक्म दिया	उस का	कि	जोड़ा जाए	और वह डरते हैं	अपना रब
وَأَنَّمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰ ۚ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولَٰؤِ الْأَلْبَابِ (١٩) الَّذِينَ يُؤْفُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَلَا يَنْقُضُونَ الْمِيثَاقَ (٢٠)	और ख़ौफ़ खाते हैं	बुरा	हिसाब	21	और वह लोग जो	उन्होंने ने सब्र किया	हासिल करने के लिए	खुशी	अपना रब
وَأَنَّمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰ ۚ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولَٰؤِ الْأَلْبَابِ (١٩) الَّذِينَ يُؤْفُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَلَا يَنْقُضُونَ الْمِيثَاقَ (٢٠)	और उन्होंने ने काइम की	नमाज़	और खर्च किया	उस से जो	हम ने उन्हें दिया	पोशीदा	और ज़ाहिर	और टाल देते हैं	और
وَأَنَّمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰ ۚ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولَٰؤِ الْأَلْبَابِ (١٩) الَّذِينَ يُؤْفُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَلَا يَنْقُضُونَ الْمِيثَاقَ (٢٠)	नेकी से	बुराई	वही है	उन के लिए	आख़िरत का घर	22	बागात	हमेशगी	और
وَأَنَّمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰ ۚ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولَٰؤِ الْأَلْبَابِ (١٩) الَّذِينَ يُؤْفُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَلَا يَنْقُضُونَ الْمِيثَاقَ (٢٠)	वह उस में दाख़िल होंगे	और जो	नेक हुए	से (में)	उन के बाप दादा	और उन की वीवियां	और उन की औलाद	और फ़रिश्ते	और
وَأَنَّمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰ ۚ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولَٰؤِ الْأَلْبَابِ (١٩) الَّذِينَ يُؤْفُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَلَا يَنْقُضُونَ الْمِيثَاقَ (٢٠)	दाख़िल होंगे	उन पर	से	हर दरवाज़ा	23	सलामती	तुम पर	इस लिए कि	तुम ने सब्र किया
وَأَنَّمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰ ۚ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولَٰؤِ الْأَلْبَابِ (١٩) الَّذِينَ يُؤْفُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَلَا يَنْقُضُونَ الْمِيثَاقَ (٢٠)	आख़िरत का घर	24	और वह लोग जो	तोड़ते हैं	अल्लाह का अहद	उस के बाद	उस को पुख्ता करना	और	और
وَأَنَّمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰ ۚ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولَٰؤِ الْأَلْبَابِ (١٩) الَّذِينَ يُؤْفُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَلَا يَنْقُضُونَ الْمِيثَاقَ (٢٠)	और वह काटते हैं	जो	अल्लाह ने हुक्म दिया	उस का	कि वह जोड़ा जाए	और वह फ़साद करते हैं	ज़मीन में	यही है	और
وَأَنَّمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰ ۚ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولَٰؤِ الْأَلْبَابِ (١٩) الَّذِينَ يُؤْفُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَلَا يَنْقُضُونَ الْمِيثَاقَ (٢٠)	उन के लिए	लानत	और उनके लिए	बुरा घर	25	अल्लाह	कुशादा करता है	रिज़्क	जिस के लिए वह चाहता है
وَأَنَّمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰ ۚ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولَٰؤِ الْأَلْبَابِ (١٩) الَّذِينَ يُؤْفُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَلَا يَنْقُضُونَ الْمِيثَاقَ (٢٠)	और वह खुश है	ज़िन्दगी से	दुनिया	और नहीं	दुनिया की ज़िन्दगी	आख़िरत (के मुक़ाबले) में	मगर (सिर्फ़)	मताअ हकीर	26

जिन लोगों ने अपने रब का हुक्म मान लिया उन के लिए भलाई है, और जिन्होंने ने उस का हुक्म न माना अगर जो कुछ ज़मीन में है सब उन का हो और उस के साथ उस जैसा (और भी हो) कि वह उस को फ़िदये में दें (फिर भी बचाओ न होगा), उन्हीं लोगों के लिए हिसाब बुरा है, और उन का ठिकाना जहन्नम है और (वह) बुरी जगह है। (18) क्या जो शख्स जानता है कि जो उतारा गया तुम पर तुम्हारे रब की तरफ़ से, वह हक् है उस जैसा (हो सकता है) जो अन्धा हो, इस के सिवा नहीं कि अक्ल वाले ही समझते हैं। (19) वह जो कि अल्लाह का अहद पूरा करते हैं, और पुख्ता कौल ओ इक़्रार नहीं तोड़ते। (20) और वह लोग जो जोड़े रखते हैं जिस के लिए अल्लाह ने हुक्म दिया कि जोड़ा जाए, और वह अपने रब से डरते हैं, और बुरे हिसाब का ख़ौफ़ खाते हैं। (21) और जिन लोगों ने अपने रब की खुशी हासिल करने के लिए सब्र किया, और उन्होंने ने नमाज़ काइम की, और जो हम ने उन्हें दिया उस से खर्च किया पोशीदा और ज़ाहिर, और वह नेकी से बुराई को टाल देते हैं, वही है जिन के लिए आख़िरत का घर है। (22) हमेशगी के बागात (हैं) उन में वह दाख़िल होंगे, और वह जो उन के बाप दादा, और उन की वीवियों, और औलाद में से नेक हुए और उन पर हर दरवाज़े से फ़रिश्ते दाख़िल होंगे, (23) (यह कहते हुए कि) तुम पर सलामती हो इस लिए कि तुम ने सब्र किया पस खूब है आख़िरत का घर। (24) और जो लोग अल्लाह का अहद उस को पुख्ता करने के बाद तोड़ते हैं, और वह काटते हैं जिस के लिए अल्लाह ने हुक्म दिया जो उसे जोड़ा जाए, और वह ज़मीन (मुल्क) में फ़साद करते हैं, यही लोग हैं जिन के लिए लानत है और उन के लिए बुरा घर है। (25) अल्लाह जिस के लिए चाहता है रिज़्क कुशादा करता है, और (जिस के लिए चाहता है) तंग करता है, और वह दुनिया की ज़िन्दगी से खुश हैं, और दुनिया की ज़िन्दगी आख़िरत के मुक़ाबले में मताअ हकीर है। (26)

और काफ़िर कहते हैं उस पर उस के रब (की तरफ़) से कोई निशानी क्यों न उतारी गई? आप (स) कह दें वेशक अल्लाह गुमराह करता है जिस को चाहता है, और अपनी तरफ़ उस को राह दिखाता है जो (उस की तरफ़) रुजूअ करे। (27)

जो लोग ईमान लाए और इत्मीनान पाते हैं जिन के दिल अल्लाह की याद से, याद रखो! अल्लाह की याद (ही) से दिल इत्मीनान पाते हैं। (28)

जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने अमल किए नेक, उन के लिए खुशहाली है और अच्छा ठिकाना। (29)

इसी तरह हम ने तुम्हें उस उम्मत में भेजा है, गुज़र चुकी है इस से पहले उम्मतें ताकि जो हम ने तुम्हारी तरफ़ वहि किया है तुम उन को पढ़ कर (सुनाओ) और वह (अल्लाह) रहमान के मुन्किर होते हैं आप (स) कहें वह मेरा रब है उस के सिवा कोई माबूद नहीं, उस पर मैं ने भरोसा किया और उसी की तरफ़ मेरा रुजूअ है (रुजूअ करता हूँ)। (30)

और अगर ऐसा कुरआन होता कि उस से पहाड़ चल पड़ते, या उस से ज़मीन फट जाती, या उस से मुर्दे वात करने लगते (फिर भी यह ईमान न लाते) बल्कि अल्लाह ही के लिए है तमाम कामों (का इख़्तियार), तो क्या मोमिनों को (उस से) इत्मीनान नहीं हुआ कि अगर अल्लाह चाहता तो सब लोगों को हिदायत दे देता और काफ़िरों को उन के आमाल के बदले हमेशा सख़्त मुसीबत पहुँचती रहेगी, या उतरेगी करीब उन के घर के, यहां तक कि अल्लाह का वादा आजाए और वेशक अल्लाह वादे के खिलाफ़ नहीं करता। (31)

और अलबत्ता तुम से पहले रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया गया, तो मैं ने काफ़िरों को ढील दी, फिर मैं ने उन की पकड़ की सो मेरा बदला (अज़ाब) कैसा था? (32)

पस क्या जो हर शख्स के आमाल का निगरान है (वह बुतों की तरह हो सकता है?) और उन्होंने ने बना लिए अल्लाह के शरीक, आप (स) कहें उन के नाम तो लो या तुम (अल्लाह) को वह बतलाते हो जो पूरी ज़मीन में उस के इल्म में नहीं, या महज़ ज़ाहिरी (ऊपरी) वात करते हो, बल्कि जिन लोगों ने कुफ़ किया उन के लिए उन के फ़रेब खुशनुमा बना दिए गए और वह राहे (हिदायत) से रोक दिए गए और जिस को अल्लाह गुमराह करे उस के लिए कोई हिदायत देने वाला नहीं। (33)

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ قُلْ إِنَّ اللَّهَ									
वेशक अल्लाह	आप कह दें	उस का रब	से	कोई निशानी	उस पर	उतारी गई	क्यों न	वह लोग जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)	और कहते हैं
يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي إِلَيْهِ مَنْ أَنْابَ ⁽²⁷⁾ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَطْمَئِنُّ									
और इत्मीनान पाते हैं	ईमान लाए	जो लोग	27	रुजूअ करे	जो	अपनी तरफ़	और राह दिखाता है	जिस को चाहता है	गुमराह करता है
قُلُوبُهُمْ بِذِكْرِ اللَّهِ أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ ⁽²⁸⁾ الَّذِينَ آمَنُوا									
ईमान लाए	जो लोग	28	दिल (जमा)	इत्मीनान पाते हैं	अल्लाह के ज़िक्र से	याद रखो	अल्लाह के ज़िक्र से	जिन के दिल	
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ طُوبَى لَهُمْ وَحَسُنَ مَا فِي كَذَلِكَ أَرْسَلْنَاكَ فِي									
में	हम ने तुम्हें भेजा	इसी तरह	29	ठिकाना	और अच्छा	उन के लिए	खुशहाली	नेक (जमा)	और उन्होंने ने अमल किए
أُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَا أُمَمٌ لَبِثُوا عَلَى الْعِلْمِ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ									
तुम्हारी तरफ़	हम ने वहि किया	वह जो कि	उन पर (उन को)	ताकि तुम पढ़ो	उम्मतें	उस से पहले	गुज़र चुकी है	उस उम्मत	
وَهُمْ يَكْفُرُونَ بِالرَّحْمَنِ قُلْ هُوَ رَبِّي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ									
और उस की तरफ़	मैं ने भरोसा किया	उस पर	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	मेरा रब	वह	कह दें	रहमान के	मुन्किर होते हैं और वह
مَتَابٍ ⁽³⁰⁾ وَلَوْ أَنَّ قُرْآنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ أَوْ قُطِعَتْ بِهِ الْأَرْضُ									
ज़मीन	उस से	फट जाती	या	पहाड़	उस से	चलाए जाते	ऐसा कुरआन (होता)	यह के अग़र	30 मेरा रुजूअ
أَوْ كَلِمَةٍ بِهِ الْمَوْتُ بَلْ لِلَّهِ الْأَمْرُ جَمِيعًا أَفَلَمْ يَأْيَسِ الَّذِينَ آمَنُوا أَنْ									
कि	वह लोग जो ईमान लाए (मोमिन)	तो क्या इत्मीनान नहीं हुआ	तमाम	काम	अल्लाह के लिए	बल्कि	मुर्दे	उस से	या बात करने लगते
لَوْ يَشَاءُ اللَّهُ لَهْدَى النَّاسَ جَمِيعًا وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا تُصِيبُهُمْ									
उन्हें पहुँचेगी	वह लोग जो काफ़िर हुए (काफ़िर)	और हमेशा	सब	लोग	तो हिदायत दे देता	अगर अल्लाह चाहता			
بِمَا صَنَعُوا قَارِعَةً أَوْ تَحُلُّ قَرِيبًا مِنْ دَارِهِمْ حَتَّى يَأْتِيَ وَعْدُ اللَّهِ									
अल्लाह का वादा	आजाए	यहां तक	उन के घर	से (के)	करीब	या उतरेगी	सख़्त मुसीबत	उस के बदले जो उन्होंने ने किया (आमाल)	
إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ ⁽³¹⁾ وَلَقَدْ اسْتَهْزَيْ بِرُسُلٍ مِنْ قَبْلِكَ فَاْمَلَيْتُ									
तो मैं ने ढील दी	तुम से पहले	रसूलों का	मज़ाक़ उड़ाया गया	और अलबत्ता	31	वादा	खिलाफ़ नहीं करता	वेशक अल्लाह	
لِلَّذِينَ كَفَرُوا ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ⁽³²⁾ أَفَمَنْ هُوَ قَابِ									
निगरान	वह	पस क्या जो	32	मेरा बदला	था	सो कैसा	मैं ने उन की पकड़ की	फिर	जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)
عَلَى كُلِّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَجَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ قُلْ سَمُّوهُمْ أَمْ تُنَبِّئُونَهُ									
तुम उसे बतलाते हो	या	उन के नाम लो	आप कहें	शरीक (जमा)	अल्लाह और उन्होंने ने	जो उस ने कमाया (आमाल)	हर शख्स	पर	
بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي الْأَرْضِ أَمْ بَظَاهِرٍ مِنَ الْقَوْلِ بَلْ زَيْنَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا									
उन लोगों के लिए जिन्होंने ने कुफ़ किया	बल्कि खुशनुमा बना दिए गए	वात	से	महज़ ज़ाहिरी	या	ज़मीन में	उस के इल्म में नहीं	वह जो	
مَكْرُهُمْ وَصَدُّوا عَنِ السَّبِيلِ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ⁽³³⁾									
33	कोई हिदायत देने वाला	उस के लिए	तो नहीं	गुमराह करे अल्लाह	और जो - जिस	राह	से	और वह रोक दिए गए	उन के फ़रेब

لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَشَقُّ وَمَا						
उन के लिए	अज़ाब	में	दुनिया की ज़िन्दगी	और अलबत्ता आखिरत का अज़ाब	निहायत तकलीफ़दह	और नहीं
لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَاقٍ (٣٤) مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وَعَدَ الْمُتَّقُونَ						
उन के लिए	अल्लाह से	कोई बचाने वाला	34	कैफ़ियत	जन्नत	और जो कि
उन के लिए	अल्लाह से	कोई बचाने वाला	34	कैफ़ियत	जन्नत	और जो कि
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ أَكْلُهَا دَائِمٌ وَظِلُّهَا تِلْكَ عُقْبَى						
बहती है	उस के नीचे	नहरें	उस के फल	दाइम	और उस का साया	यह
الَّذِينَ اتَّقَوْا وَعُقْبَى الْكَافِرِينَ النَّارُ (٣٥) وَالَّذِينَ اتَّيْنَهُمُ						
परहेज़गारों (जमा)	और अनुजाम	काफ़िरों	जहन्नम	35	और वह लोग जो	हम ने उन्हें दी
الْكِتَابَ يَفْرَحُونَ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمِنَ الْأَحْزَابِ مَنْ يُنْكِرُ						
किताब	वह खुश होते हैं	उस से जो	नाज़िल किया गया	तुम्हारी तरफ़	और बाज़	जो
بَعْضَهُ قُلْ إِنَّمَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ وَلَا أُشْرِكَ بِهِ إِلَيْهِ						
उस की बाज़	आप कहें	इस के सिवा नहीं	मुझे हुकम दिया गया	कि	मैं इबादत करूँ	अल्लाह
أَدْعُوا وَإِلَيْهِ مَابِ (٣٦) وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا وَلَئِنْ						
मैं बुलाता हूँ	और उसी की तरफ़	मेरा ठिकाना	36	और उसी तरह	हम ने उस को नाज़िल किया	हक़म
اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ بَعْدَ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ						
तू ने पैरवी की	उन की खाहिशात	वाद	जब कि तेरे पास आगया	इल्म (वहि)	तेरे लिए नहीं	अल्लाह से
مِنْ وَلِيِّي وَلَا وَاقٍ (٣٧) وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِنْ قَبْلِكَ						
कोई हिमायती	और न कोई बचाने वाला	37	और अलबत्ता हम ने भेजे	रसूल (जमा)	तुम से पहले	
وَجَعَلْنَا لَهُمْ أَزْوَاجًا وَذُرِّيَّةً وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَنْ يَأْتِيَ						
और हम ने दी	उन को	बीवियां	और औलाद	और नहीं हुआ	किसी रसूल के लिए	कि
بَايَةً إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ لِكُلِّ أَجَلٍ كِتَابٌ (٣٨) يَمْحُوا اللَّهُ مَا يَشَاءُ						
कोई निशानी	बग़ैर	अल्लाह की इजाज़त से	हर वादे के लिए	एक तहरीर	38	मिटा देता है अल्लाह
وَيُثَبِّتُ ۖ وَعِنْدَهُ أُمُّ الْكِتَابِ (٣٩) وَإِنْ مَا نُرِيدُكَ بَعْضُ						
और बाकी रखता है	उस के पास	असल किताब (लौहे महफूज़)	39	और अगर	तुम्हें दिखा दें हम	कुछ हिस्सा
الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفِّيَنَّكَ فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَالُ وَعَلَيْنَا						
वह जो कि	हम ने उन से वादा किया	या	हम तुम्हें वफ़ात दें	तो इस के सिवा नहीं	तुम पर (तुम्हारे ज़िम्मे)	पहुँचाना
الْحِسَابِ (٤٠) أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا						
हिसाब लेना	40	क्या वह नहीं देखते	कि हम चले आते हैं	ज़मीन	उस को घटाते	से
وَاللَّهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقَّبَ لِحُكْمِهِ ۖ وَهُوَ سَرِيعُ الْحِسَابِ (٤١)						
और अल्लाह	हुक़म फ़रमाता है	कोई पीछे डालने वाला नहीं	उस के हुक़म को	और वह	जल्द	हिसाब लेने वाला

उन के लिए दुनिया की ज़िन्दगी में अज़ाब है, अलबत्ता आखिरत का अज़ाब निहायत तकलीफ़दह है और उन के लिए कोई अल्लाह से बचाने वाला नहीं। (34)

और उस जन्नत की कैफ़ियत जिस का परहेज़गारों से वादा किया गया है (यह है) उस के नीचे नहरें बहती हैं, उस के फल दाइम (हमेशा) हैं और उस का साया (भी) यह है अनुजाम परहेज़गारों का, और काफ़िरों का अनुजाम जहन्नम है। (35)

और जिन लोगों को हम ने दी है किताब (अहले किताब) वह उस से खुश होते हैं जो तुम्हारी तरफ़ उतारा गया, और बाज़ ग़िरोह उस की बाज़ (वातों) का इन्कार करते हैं। आप (स) कहें उस के सिवा नहीं कि मुझे हुक़म दिया गया है कि मैं अल्लाह की इबादत करूँ, और उस का शरीक न ठहराऊँ, मैं उस की तरफ़ बुलाता हूँ और उसी की तरफ़ मेरा ठिकाना है। (36)

और उसी तरह हम ने इस (कुरआन) को अरबी ज़बान में हुक़म नाज़िल किया है, और अगर तू ने उन की खाहिशात की पैरवी की उस के बाद जब कि तेरे पास आगया इल्म, न तेरे लिए अल्लाह से (अल्लाह के सामने) कोई हिमायती होगा, न कोई बचाने वाला। (37)

और अलबत्ता हम ने रसूल भेजे तुम से पहले, और हम ने उन को दी बीवियां और औलाद, और किसी रसूल के लिए (इख़्तियार में) नहीं हुआ कि वह लाए कोई निशानी अल्लाह की इजाज़त के बग़ैर, हर वादे के लिए एक तहरीर है। (38)

और अल्लाह जो चाहता है मिटा देता है और बाकी रखता है (जो वह चाहता है) और उस के पास लौहे महफूज़ है। (39)

और अगर हम तुम्हें कुछ हिस्सा (उस अज़ाब का) दिखा दें जिस का हम ने उन से वादा किया है, या तुम्हें वफ़ात दे दें, तो इस के सिवा नहीं कि तुम्हारे ज़िम्मे पहुँचाना है और हिसाब लेना हमारा काम है। (40)

क्या वह नहीं देखते? कि हम चले आते हैं ज़मीन को उस के किनारों से घटाते, और अल्लाह हुक़म फ़रमाता है, कोई उस के हुक़म को पीछे डालने वाला नहीं, और वह तेज़ हिसाब लेने वाला है। (41)

और जो उन से पहले थे उन्होंने ने चालें चलीं तो सारी चाल तो अल्लाह ही की है, वह जानता है जो कमाता है हर शख्स, और अनकरीब काफिर जान लेंगे आक़िबत का घर किस के लिए है। (42)

और काफिर कहते हैं: तू रसूल नहीं, आप (स) कह दें, मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह गवाह काफी है, और वह जिस के पास किताब का इल्म है। (43)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरवान, रहम करने वाला है अलिफ़-लाम-रा - यह एक किताब है, हम ने तुम्हारी तरफ़ उतारी, ताकि तुम लोगों को निकालो उन के रब के हुक्म से अन्धेरो से नूर की तरफ़, ग़ालिब, खूबियों वाले अल्लाह के रास्ते की तरफ़, (1) उसी के लिए है जो कुछ आस्मानों में है और ज़मीन में है, और काफ़िरो के लिए सख़्त अज़ाब से ख़राबी है। (2) जो दुनिया की ज़िन्दगी को पसन्द करते हैं अख़िरत पर, और अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं, और उस में कज़ी ढूँडते हैं, यही लोग दूर की गुमराही में हैं। (3)

और हम ने कोई रसूल नहीं भेजा मगर उस की क़ौम की ज़बान में, ताकि वह उन के लिए (अल्लाह के अहक़ाम) खोल कर बयान कर दे फिर अल्लाह जिस को चाहता है गुमराह करता है, और जिस को चाहता है हिदायत देता है, और वह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (4)

और अलवत्ता हम ने मूसा (अ) को अपनी निशानियों के साथ भेजा कि अपनी क़ौम को अन्धेरो से रोशनी की तरफ़ निकाल, और उन्हें अल्लाह के (अज़ीम वाक़िआत के) दिन याद दिला, बेशक उस में हर इन्तिहाई सबर करने वाले, शुक्र गुज़ार के लिए निशानियां हैं। (5)

وَقَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلِلَّهِ الْمَكْرُ جَمِيعًا يَعْلَمُ						
वह जानता है	सब	चाल (तदबीर)	तो अल्लाह के लिए	उन से पहले	उन लोगों ने जो	और चालें चलीं
مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ وَسَيَعْلَمُ الْكُفْرُ لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ (42)						
42	आक़िबत का घर	किस के लिए	काफिर	और अनकरीब जान लेंगे	हर नफ़्स (शख्स)	जो कमाता है
وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَسَتْ مُرْسَلًا قُلْ كَفَى بِاللَّهِ شَهِيدًا						
गवाह	अल्लाह	काफ़ी है	आप (स) कहें	रसूल	तू नहीं	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफिर)
بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَمَنْ عِنْدَهُ عِلْمُ الْكِتَابِ (43)						
43	किताब का इल्म	उस के पास	और जो	और तुम्हारे दरमियान	मेरे दरमियान	
آيَاتُهَا ٥٢ ﴿١٤﴾ سُورَةُ إِبْرَاهِيمَ ﴿٧﴾ زُكُوعَاتُهَا ٧						
रुक़आत 7 (14) सूरह इब्राहीम आयात 52						
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ						
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है						
الرَّحْمَنُ كَتَبَ أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ						
नूर की तरफ़	अन्धेरो से	लोग	ताकि तुम निकालो	तुम्हारी तरफ़	हम ने उस को उतारा	एक किताब अलिफ़ लाम रा
بِإِذْنِ رَبِّهِمْ إِلَى صِرَاطِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ (1) اللَّهُ الَّذِي لَهُ مَا						
जो कुछ	उसी के लिए	वह जो कि	अल्लाह	1	खूबियों वाला	ज़बरदस्त रास्ता तरफ़ उन का रब हुक्म से
فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَوَيْلٌ لِلْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيدٍ (2)						
2	सख़्त	अज़ाब	से	काफ़िरो के लिए	और ख़राबी	ज़मीन में और जो कुछ आस्मानों में
الَّذِينَ يَسْتَحِبُّونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ وَيَصُدُّونَ عَنْ						
से	और रोकते हैं	अख़िरत पर	दुनिया	ज़िन्दगी	पसन्द करते हैं	वह जो कि
سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا أُولَئِكَ فِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ (3)						
3	दूर	गुमराही	में	वही लोग	कज़ी	और उस में ढूँडते हैं अल्लाह का रास्ता
وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُولٍ إِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهِ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ فَيُضِلَّ اللَّهُ						
फिर गुमराह करता है अल्लाह	उन के लिए	ताकि खोल कर बयान करदे	उस की क़ौम की	ज़बान में	मगर	कोई रसूल और हम ने नहीं भेजा
مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ (4)						
4	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह	जिस को चाहता है	और हिदायत देता है	जिस को वह चाहता है
وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَى بِآيَاتِنَا أَنْ أَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ						
नूर की तरफ़	अन्धेरो से	अपनी क़ौम	तू निकाल	कि	अपनी निशानियों के साथ	मूसा (अ) और अलवत्ता हम ने भेजा
وَذَكَّرْهُمْ بِآيَمِ اللَّهِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ (5)						
5	शुक्र गुज़ार	हर सबर करने वाले के लिए	अलवत्ता निशानियां	उस में	बेशक	अल्लाह के दिन और याद दिला उन्हें

وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ							
अपने ऊपर	अल्लाह की नेमत	तुम याद करो	अपनी कौम को	मूसा (अ)	कहा	और जब	
إِذْ أَنْجَاكُمْ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ							
बुरा अज़ाब		वह तुम्हें पहुँचाते थे		फिरऔन की कौम		से	जब उस ने नजात दी तुम्हें
وَيَذَّبَحُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ وَفِي ذَلِكُمْ بَلَاءٌ							
आज़माइश	उस	और में	तुम्हारी औरतें	और ज़िन्दा छोड़ते थे	तुम्हारे बेटे	और जुवह करते थे	
مِنْ رَبِّكُمْ عَظِيمٌ ﴿٦﴾ وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ							
तुम शुक्र करोगे	अलबत्ता अगर	तुम्हारा रब	और जब आगाह किया	6	बड़ी	तुम्हारा रब	से
لَا زِيْدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ ﴿٧﴾ وَقَالَ							
और कहा	7	बड़ा सख्त	मेरा अज़ाब	वेशक	तुम ने नाशुकी की	और अलबत्ता अगर	तो मैं ज़रूर तुम्हें और ज़ियादा दूंगा
مُوسَى إِنَّ تَكْفُرُوا أَنْتُمْ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا فَإِنَّ اللَّهَ							
तो वेशक अल्लाह	सब	ज़मीन में	और जो	तुम	नाशुकी करोगे	अगर	मूसा (अ)
لَغَنِيٌّ حَمِيدٌ ﴿٨﴾ أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَأُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ							
तुम से पहले	वह लोग जो	ख़बर	क्या तुम्हें नहीं आई	8	सब ख़ूबियों वाला	वेनियाज़	
قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ ۚ وَالَّذِينَ مِنْ بَعْدِهِمْ لَا يَعْلَمُهُمْ							
उन की ख़बर नहीं	उन के बाद		और वह जो	और समूद	और आद	नूह (अ) की कौम	
إِلَّا اللَّهُ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَرَدُّوا أَيْدِيَهُمْ							
अपने हाथ	तो उन्होंने ने लौटाए	निशानियों के साथ		उन के रसूल	उन के पास आए	अल्लाह के सिवाए	
فِي أَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوا إِنَّا كَفَرْنَا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ							
उस के साथ	तुम्हें भेजा गया	वह जो	वेशक हम नहीं मानते	और वह बोले	उन के मुँह	में	
وَأَنَّا لَفِي شَكٍّ مِمَّا تَدْعُونَنَا إِلَيْهِ مُرِيبٌ ﴿٩﴾ قَالَتْ رُسُلُهُمْ							
उन के रसूल	कहा	9	तरदुद में डालते हुए	उस की तरफ	तुम हमें बुलाते हो	उस से जो	शक अलबत्ता में और वेशक हम
أَفِي اللَّهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يَدْعُوكُمْ							
वह तुम्हें बुलाता है		और ज़मीन	आस्मानों	बनाने वाला	शुवाह - शक	क्या अल्लाह में	
لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُخْرِجَكُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى							
एक मुद्दत मुक़र्ररा		तक	और मोहलत दे तुम्हें	तुम्हारे गुनाह	से (कुछ)	ता कि बख़्शदे तुम्हें	
قَالُوا إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا تُرِيدُونَ أَنْ تَصُدُّونَا							
हमें रोक दो	कि	तुम चाहते हो	हम जैसे	वशर	सिर्फ	तुम	नहीं वह बोले
عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُنَا فَأَثُونَا بِسُلْطَنِ مُّبِينٍ ﴿١٠﴾							
10	रौशन	दलील, मोज़िज़ा	पस लाओ हमारे पास	हमारे बाप दादा	पूजते थे		उस से जो

और (याद करो) जब कहा मूसा (अ) ने अपनी कौम को, तुम अपने ऊपर अल्लाह की नेमत याद करो, जब उस ने तुम्हें फिरऔन की कौम से नजात दी, वह तुम्हें बुरा अज़ाब पहुँचाते थे, और तुम्हारे बेटों को जुवह करते थे, और तुम्हारी औरतों (लड़कियों) को ज़िन्दा छोड़ देते थे, और उस में तुम्हारे रब की तरफ से बड़ी आज़माइश थी। (6) और जब तुम्हारे रब ने आगाह किया, अलबत्ता अगर तुम शुक्र करोगे तो मैं ज़रूर तुम्हें और ज़ियादा दूंगा, अलबत्ता अगर तुम ने नाशुकी की तो वेशक मेरा अज़ाब बड़ा सख्त है। (7) और मूसा (अ) ने कहा अगर नाशुकी करोगे तुम और जो ज़मीन में है सब के सब, तो वेशक अल्लाह वेनियाज़, सब खूबियों वाला है। (8) क्या तुम्हें उन लोगों की ख़बर नहीं आई जो तुम से पहले थे (मिसल के लिए) कौम नूह (अ), आद और समूद, और वह जो उन के बाद हुए, उन की ख़बर (किसी को) नहीं अल्लाह के सिवा, उन के पास उन के रसूल निशानियों के साथ आए, तो उन्होंने ने अपने हाथ उन के मुँह में लौटाए (ख़ामोश कर दिया) और बोले तुम्हें जिस (रिसालत) के साथ भेजा गया है हम नहीं मानते, और अलबत्ता तुम हमें जिस की तरफ बुलाते हो हम शक में हैं तरदुद में डालते हुए। (9) उन के रसूलों ने कहा क्या तुम्हें ज़मीन और आस्मान के बनाने वाले अल्लाह के बारे में शक है? वह तुम्हें बुलाता है ताकि तुम्हारे कुछ गुनाह बख़्श दे, और एक मुद्दत मुक़र्ररा तक तुम्हें मोहलत दे, वह बोले नहीं तुम सिर्फ हम जैसे वशर हो, तुम चाहते हो कि हमें रोक दो जिन को हमारे बाप दादा पूजते थे, पस हमारे पास रौशन दलील (मोजिज़ा) लाओ। (10)

उन के रसूलों ने उन से कहा (वेशक) हम सिर्फ़ तुम जैसे वशर हैं लेकिन अल्लाह अपने बन्दों में से जिस पर चाहे एहसान करता है, और हमारे लिए (हमारा काम) नहीं कि हम अल्लाह के हुक्म के वग़ैर तुम्हारे पास कोई दलील (मोज़िज़ा) लाएं, और मोमिनों को अल्लाह पर ही भरोसा करना चाहिए। (11) और हमे किया हुआ? कि हम अल्लाह पर भरोसा न करें, और उस ने हमें हमारी राहें दिखा दी हैं, और तुम हमें जो ईज़ा देते हो हम उस पर ज़रूर सब्र करेंगे, और भरोसा करने वालों को अल्लाह पर ही भरोसा करना चाहिए। (12) और काफ़िरों ने अपने रसूलों से कहा हम तुम्हें ज़रूर निकाल देंगे अपनी ज़मीन (मुल्क) से, या तुम हमारे दिन में लौट आओ तो उन के रब ने उन की तरफ़ वहि भेजी कि हम ज़ालिमों को ज़रूर हलाक कर देंगे। (13) और अलबत्ता हम तुम्हें उन के बाद ज़मीन में ज़रूर आबाद कर देंगे, यह इस लिए है जो डरा मेरे रूबरू खड़ा होने से, और डरा मेरे एलाने अज़ाब से। (14) और उन्होंने ने (अबिया ने) फ़तह मांगी, और नामुराद हुआ हर सरकश, ज़िद्दी। (15) उस के पीछे जहन्नम है, और उसे पीप का पानी पिलाया जाएगा। (16) वह उसे घूट घूट पिएगा, और उसे गले से न उतार सकेगा, और उसे मौत आएगी हर तरफ़ से और वह मरेगा नहीं, और उस के पीछे सख़्त अज़ाब है। (17) उन लोगों की मिसाल जो अपने रब के मुन्किर हुए, उन के अमल राख की तरह हैं कि उस पर आन्धी के दिन ज़ोर की हवा चली (और सब उड़ा ले गई) जो उन्होंने ने कमाया उन्हें उस से किसी चीज़ पर कुदरत न होगी, यही है दूर की (परले दरजे की) गुमराही। (18) क्या तू ने नहीं देखा? कि अल्लाह ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया हक़ के साथ (ठकि ठीक) अगर वह चाहे तुम्हें ले जाए और ले आए कोई नई मख़लूक। (19) और यह अल्लाह पर कुछ दुश्वार नहीं। (20)

قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ إِنْ نَحْنُ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَمُنُّ										
एहसान करता है	अल्लाह	और लेकिन	तुम जैसे	वशर	सिर्फ	हम	नहीं	उन के रसूल	उन से	कहा
عَلَى مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَمَا كَانَ لَنَا أَنْ نَأْتِيَكُمْ بِسُلْطَنٍ										
कोई दलील	तुम्हारे पास लाएं	कि	हमारे लिए	और नहीं है	अपने बन्दे	से	जिस पर चाहे			
إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١١﴾ وَمَا لَنَا										
हमारे लिए	और क्या	11	मोमिन (जमा)	पस भरोसा करना चाहिए	और अल्लाह पर	अल्लाह के हुक्म से	मगर (वगैर)			
أَلَا نَتَوَكَّلُ عَلَى اللَّهِ وَقَدْ هَدَانَا سُبُلَنَا وَلَنَصْبِرَنَّ عَلَى مَا										
जो	पर	और हम ज़रूर सब्र करेंगे	हमारी राहें	और उस ने हमें दिखा दी	अल्लाह पर	कि हम न भरोसा करें				
أَذِيتُمُونَا وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿١٢﴾ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا										
जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफिर)	और कहा	12	भरोसा करने वाले	पस भरोसा करना चाहिए	और अल्लाह पर	तुम हमें ईज़ा देते हो				
لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِنْ أَرْضِنَا أَوْ لَتَعُوذُنَّ فِي مِلَّتِنَا										
हमारे दिन में	तुम लौट आओ	या	अपनी ज़मीन	से	ज़रूर हम तुम्हें निकाल देंगे	अपने रसूलों को				
فَأَوْحَى إِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظَّالِمِينَ ﴿١٣﴾ وَلَنُسَكِّنَنَّكُمْ الْأَرْضَ										
ज़मीन	और अलबत्ता हम तुम्हें आबाद कर देंगे	13	ज़ालिम (जमा)	ज़रूर हम हलाक कर देंगे	उन का रब	उन की तरफ	तो वहि भेजी			
مِنْ بَعْدِهِمْ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِي وَخَافَ وَعِيدِ ﴿١٤﴾ وَاسْتَفْتَحُوا										
और उन्होंने ने फतह मांगी	14	वईद (एलाने अज़ाब)	और डरा	मेरे रूबरू खड़ा होना	डरा	उस के लिए जो	यह	उन के बाद		
وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ﴿١٥﴾ مِنْ وَرَائِهِ جَهَنَّمُ وَيُسْقَىٰ مِنْ مَّاءٍ										
पानी	से	और उसे पिलाया जाएगा	जहन्नम	उस के पीछे	15	ज़िद्दी	सरकश	हर	और नामुराद हुआ	
صَدِيدٍ ﴿١٦﴾ يَتَجَرَّعُهُ وَلَا يَكَادُ يُسِيغُهُ وَيَأْتِيهِ الْمَوْتُ مِنْ										
से	मौत	और आएगी उसे	गले से उतार सकेगा उसे	और न	उसे घूट घूट पिएगा	16	पीप वाला			
كُلِّ مَكَانٍ وَمَا هُوَ بِمَيِّتٍ وَمِنْ وَرَائِهِ عَذَابٌ غَلِيظٌ ﴿١٧﴾ مَثَلُ										
मिसाल	17	सख़्त	अज़ाब	और उस के पीछे	मरने वाला	और न वह	हर तरफ			
الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ أَعْمَالُهُمْ كَرَمَادٍ اشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيحُ فِي يَوْمٍ عَاصِفٍ										
आन्धी वाला	दिन	में	हवा	उस पर	ज़ोर की चली	राख की तरह	उन के अमल	अपने रब के	वह लोग जो मुन्किर हुए	
لَا يَقْدِرُونَ مِمَّا كَسَبُوا عَلَىٰ شَيْءٍ ذَٰلِكَ هُوَ الصَّلَاةُ الْبَعِيدُ ﴿١٨﴾										
18	दूर	गुमराही	वह	यह	किसी चीज़ पर	उन्होंने ने कमाया	उस से जो	उन्हें कुदरत न होगी		
أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ إِنْ يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ										
तुम्हें लेजाए	वह चाहे	अगर	हक के साथ	और ज़मीन	आस्मानों	पैदा किया	अल्लाह	कि	क्या तू ने न देखा	
وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ﴿١٩﴾ وَمَا ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ﴿٢٠﴾										
20	कुछ दुश्वार	अल्लाह पर	यह	और नहीं	19	नई	मखलूक	और लाए		

وَبَرُّوْا لِلّٰهِ جَمِيْعًا فَقَالَ الضُّعْفُوْ لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا اِنَّا كُنَّا							
वेशक हम थे	बड़े बनते थे	उन लोगों से जो	कमज़ोर	फिर कहेंगे	सब	अल्लाह के आगे	और वह हाज़िर होंगे
لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ							
किसी कद	अल्लाह का अज़ाब	से	हम से	दफ़ा करते हो	तुम	तो क्या	ताबे तुम्हारे
قَالُوْا لَوْ هَدٰنَا اللّٰهُ لَهٰدِيْنٰكُمْ سَوَآءٌ عَلَيْنَا اَجْرَعْنَا اَمْ							
या	ख़्वाह हम घबराएं	हम पर (हमारे लिए)	बराबर	अलबत्ता हम हिदायत करते तुम्हें	अल्लाह	हमें हिदायत करता	अगर वह कहेंगे
صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَّحِيْصٍ (२१) وَقَالَ الشَّيْطٰنُ لَمَّا قُضِيَ الْاَمْرُ							
अमर	फैसला हो गया	जब	शैतान	और बोला	21	कोई छुटकारा	हम सबूर करें
اِنَّ اللّٰهَ وَعَدَكُمْ وَعَدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُكُمْ فَاحْلَفْتُكُمْ وَمَا كَانَ							
था	और न	फिर मैं ने उस के खिलाफ़ किया तुम से	और मैं ने वादा किया तुम से	सच्चा वादा	वादा किया तुम से	वेशक अल्लाह	
لِيْ عَلَيَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّا اَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِيْ							
मेरा	पस तुम ने कहा मान लिया	मैं ने बुलाया तुम्हें	यह कि	मगर	कोई ज़ोर	तुम पर	मेरा
فَلَا تَلُوْمُوْنِيْ وَلُوْمُوْا اَنْفُسَكُمْ مَا اَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَا اَنْتُمْ بِمُصْرِخِيْ							
फ़र्याद रसी कर सकते हो मेरी	तुम	और न	फ़र्याद रसी कर सकता तुम्हारी	नहीं मैं	अपने ऊपर	और इल्ज़ाम लगाओ तुम	लिहाज़ा न लगाओ मुझ पर इल्ज़ाम तुम
اِنِّيْ كَفَرْتُ بِمَا اَشْرَكْتُمُوْنَ مِنْ قَبْلُ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ							
उन के लिए	ज़ालिम (जमा)	वेशक	उस से क़व्ल	तुम ने शरीक बनाया मुझे	उस से जो	वेशक मैं इन्कार करता हूँ	
عَذَابٌ اَلِيْمٌ (२२) وَاَدْخَلَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ							
नेक	और उन्होंने ने अमल किए	जो लोग ईमान लाए	और दाख़िल किए गए	22	दर्दनाक अज़ाब		
جَنَّتْ تَجْرٰى مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ؕ							
अपना रव	हुक़्म से	उस में	वह हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	वहती है	वागात
تَحِيّٰهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ (२३) اَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا							
मिसाल	बयान की अल्लाह ने	कैसी	क्या तुम ने नहीं देखा	23	सलाम	उस में	उन का तुहफ़ा-ए-मुलाक़ात
كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَفَرْعُهَا فِي السَّمَآءِ (२४)							
24	आस्मान	में	और उस की शाख़	मज़बूत	उस की जड़	पाकीज़ा	जैसे दरख़्त कलिमाए तय्यबा (पाक वात)
تُوْتِيْ اُكْلَهَا كُلَّ حِيْنٍ بِاِذْنِ رَبِّهَا وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ							
मिसाल	अल्लाह	और बयान करता है	अपना रव	हुक़्म से	हर वक़्त	अपना फल	वह देता है
لِلنّٰسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ (२५) وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيْثَةٍ							
नापाक वात	और मिसाल	25	वह ग़ौर ओ फ़िक्क करें	ताकि वह	लोगों के लिए		
كَشَجَرَةٍ خَبِيْثَةٍ اِجْتَثَتْ مِنْ فَوْقِ الْاَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ (२६)							
26	कुछ भी करार	नहीं उस के लिए	ज़मीन	ऊपर	से	उखाड़ दिया गया	मानिंद दरख़्त नापाक

वह सब अल्लाह के आगे हाज़िर होंगे, फिर कहेंगे कमज़ोर उन लोगों से जो बड़े बनते थे, वेशक हम तुम्हारे ताबे थे तो क्या तुम हम से दफ़ा कर सकते हो? किसी कद अल्लाह का अज़ाब, वह कहेंगे अगर अल्लाह हमें हिदायत करता तो अलबत्ता हम तुम्हें हिदायत करते, अब हमारे लिए बराबर है हम घबराएं या सबूर करें, हमारे लिए कोई छुटकारा नहीं। (21) और (रोज़े हिसाब) जब तमाम अमूर (कामों) का फैसला हो गया शैतान बोला वेशक अल्लाह ने तुम से सच्चा वादा किया था, और मैं ने (भी) तुम से वादा किया, फिर मैं ने तुम से उस के खिलाफ़ किया, और न था मेरा तुम पर कोई ज़ोर, मगर यह कि मैं ने तुम्हें बुलाया, और तुम ने मेरा कहा मान लिया, लिहाज़ा तुम मुझ पर कुछ इल्ज़ाम न लगाओ, इल्ज़ाम अपने ऊपर लगाओ, न मैं तुम्हारी फ़र्याद रसी कर सकता हूँ और न तुम मेरी फ़र्याद रसी कर सकते हो, वेशक मैं इन्कार करता हूँ उस का जो तुम ने इस से क़व्ल मुझे शरीक बनाया, वेशक ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (22) और दाख़िल किए गए वह लोग जो ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अमल किए वागात में, उन के नीचे नहरें वहती हैं, वह हमेशा रहेंगे उस में अपने रव के हुक़्म से, उस में उन का तुहफ़ाए मुलाक़ात “सलाम” है। (23) क्या तुम ने नहीं देखा? अल्लाह ने कैसी मिसाल बयान की है पाक वात की? जैसे पाकीज़ा पेड़, उस की जड़ मज़बूत और उस की शाख़ आस्मान में, (24) वह देता है हर वक़्त अपना फल अपने रव के हुक़्म से, और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान करता है, ताकि वह ग़ौर ओ फ़िक्क करें। (25) और नापाक वात की मिसाल नापाक पेड़ की तरह है जिसे ज़मीन के ऊपर से उखाड़ दिया गया, उस के लिए कुछ भी करार नहीं। (26)

अल्लाह मोमिनों को मज़बूत बात से मज़बूत रखता है, दुनिया की ज़िन्दगी में और आखिरत में (भी), और अल्लाह ज़ालिमों को भटका देता है, और अल्लाह करता है जो वह चाहता है। (27)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा? जिन्होंने ने अल्लाह की नेमत को नाशुकी से बदल दिया, और अपनी कौम को उतारा तवाही के घर में। (28)

वह जहननम है वह उस में दाखिल होंगे और वह बुरा ठिकाना है। (29)

और उन्होंने ने अल्लाह के लिए शरीक ठहराए ताकि वह उस के रास्ते से गुमराह करें, आप (स) कह दें, फाइदा उठा लो, वेशक तुम्हारा लौटना (बाज़गशत) जहननम की तरफ है। (30)

आप (स) मेरे उन बन्दों से कह दें जो ईमान लाए कि वह नमाज़ काइम करें और उस में से खर्च करें जो मैं ने उन्हें दिया है छुपा कर और ज़ाहिरी तौर पर, उस से क़ब्ल कि वह दिन आजाए जिस में न खरीद ओ फ़रोख़्त होगी और न दोस्ती। (31)

अल्लाह है जिस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया, और आस्मान से पानी उतारा, फिर उस से निकाला तुम्हारे लिए फलों से रिज़्क, और तुम्हारे लिए कश्ती को मुसख़्बर (तावे फ़रमान) किया ताकि उस (अल्लाह) के हुक्म से दर्या में चले और मुसख़्बर किया तुम्हारे लिए नहरों को। (32)

और तुम्हारे लिए मुसख़्बर किया सूरज और चाँद को कि वह एक दस्तूर पर चल रहे हैं, और तुम्हारे लिए मुसख़्बर किया रात और दिन को, (33)

और उस ने तुम्हें दी हर चीज़ जो तुम ने उस से मांगी, और अगर तुम अल्लाह की नेमत गिनने लगे तुम उसे शुमार में न लासकोगे, वेशक इन्सान बड़ा ज़ालिम, नाशुक्रा है। (34)

और जब इब्राहीम (अ) ने कहा ऐ हमारे रब! बनादे इस शहर को अमन की जगह, और मुझे और मेरी औलाद को उस से दूर रख कि हम बुतों की परस्तिश करने लगे। (35)

يُثَبِّتُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا							
दुनिया की ज़िन्दगी	में	मज़बूत	बात से	वह लोग जो ईमान लाए (मोमिन)	अल्लाह	मज़बूत रखता है	
وَفِي الْآخِرَةِ ۚ وَيُضِلُّ اللَّهُ الظَّالِمِينَ ۖ وَيَفْعَلُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ (٢٧)							
27	जो चाहता है	अल्लाह	और करता है	ज़ालिम (जमा)	अल्लाह	और भटका देता है	और आखिरत में
أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ بَدَّلُوا نِعْمَتَ اللَّهِ كُفْرًا وَآحَلُّوا قَوْمَهُمْ							
अपनी कौम	और उतारा	नाशुकी से	अल्लाह की नेमत	बदल दिया	वह जिन्होंने ने	को	क्या तुम ने नहीं देखा
دَارَ الْبَوَارِ (٢٨) جَهَنَّمَ ۖ يَصْلَوْنَهَا ۖ وَبِئْسَ الْقَرَارُ (٢٩) وَجَعَلُوا لِلَّهِ							
और उन्होंने ने ठहराए अल्लाह के लिए	29	ठिकाना	और बुरा	उस में दाखिल होंगे	जहननम	28	तवाही का घर
أَنْدَادًا لِّيُضِلُّوا عَنْ سَبِيلِهِ ۚ قُلْ تَمَتَّعُوا فَإِن مَصِيرَكُمْ							
तुम्हारा लौटना	फिर वेशक	फाइदा उठा लो	कह दें	उस का रास्ता	से	ताकि वह गुमराह करें	शरीक
إِلَى النَّارِ (٣٠) قُلْ لِّعِبَادِيَ الَّذِينَ آمَنُوا يُقِيمُوا الصَّلَاةَ							
नमाज़	काइम करें	ईमान लाए	वह जो कि	मेरे बन्दों से	कह दें	30	जहननम तरफ
وَيُنْفِقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً مِّن قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ							
कि आजाए	उस से क़ब्ल	और ज़ाहिरी	छुपा कर	हम ने उन्हें दिया	उस से जो	और खर्च करें	
يَوْمٌ لَا بَيْعُ فِيهِ وَلَا خِلَالٌ (٣١) اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ							
उस ने पैदा किया	वह जो	अल्लाह	31	और न दोस्ती	उस में	न खरीद ओ फ़रोख़्त	वह दिन
السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ							
उस से	फिर निकाला	पानी	आस्मान से	और उतारा	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	
مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۖ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ							
दर्या में	ताकि चले	कश्ती	तुम्हारे लिए	और मुसख़्बर किया	तुम्हारे लिए	रिज़्क (जमा)	से
بِأَمْرِهِ ۖ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْإِنْهَارَ (٣٢) وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ							
और चाँद	सूरज	तुम्हारे लिए	और मुसख़्बर किया	32	नहरें (नदियाँ)	तुम्हारे लिए	उस के हुक्म से
دَابِّينَ ۖ وَسَخَّرَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ (٣٣) وَأَتَكُمْ مِّن كُلِّ مَآ							
जो	हर चीज़	से	और उस ने तुम्हें दी	33	और दिन	रात	तुम्हारे लिए
और मुसख़्बर किया	एक दस्तूर पर चलने वाले						
سَأَلْتُمُوهُ ۚ وَإِنْ تَعُدُّوا نِعْمَتَ اللَّهِ لَا تُحْصَوْهَا ۚ إِنَّ الْإِنْسَانَ							
इन्सान	वेशक	उसे शुमार में न लासकोगे	अल्लाह	नेमत	गिनने लगे तुम	और अगर	तुम ने उस से मांगी
لَظَلُمُوا كَفَّارًا (٣٤) وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ							
बना दे	ऐ हमारे रब	इब्राहीम (अ)	कहा	और जब	34	नाशुक्रा	वेशक बड़ा ज़ालिम
هَذَا الْبَلَدِ آمِنًا وَاجْنُبْنِي وَبَنِيَّ أَنْ نَعْبُدَ الْأَصْنَامَ (٣٥)							
35	बुत (जमा)	हम परस्तिश करें	कि	और मेरी औलाद	और मुझे दूर रख	अमन की जगह	यह शहर

رَبِّ اِنَّهُمْ اَضَلُّنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ						
पस जो - जिस	लोग	से	बहुत	उन्हों ने गुमराह किया	वेशक वह	ऐ मेरे रब
تَبَعْنِي ۚ فَاِنَّهُ مِيٌّ وَمَنْ عَصَانِي ۚ فَاتَّكَ غُفُوْرٌ						
बख्शने वाला	तो वेशक तू	मेरी नाफरमानी की	और जो - जिस	मुझ से	वेशक वह	मेरी पैरवी की
رَّحِيْمٌ ﴿٣٦﴾ رَبَّنَا اِنِّي اَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِي بِوَادٍ غَيْرِ						
बगैर	मैदान	अपनी ओलाद	से - कुछ	मैं ने बसाया	वेशक मैं	ऐ हमारे रब 36 निहायत मेहरबान
ذِي زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ ۚ رَبَّنَا لِئُقِيْمُوا						
ताकि काइम करें	ऐ हमारे रब	एहतिराम वाला	तेरा घर	नज्दीक	खेती वाली	
الصَّلٰوةَ فَاجْعَلْ اَفِيْدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِيْ اِلَيْهِمْ						
उन की तरफ़	वह माइल हों	लोग	से	दिल (जमा)	पस कर दे	नमाज़
وَارْزُقْهُمْ مِّنَ الثَّمَرِۚ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُوْنَ ﴿٣٧﴾ رَبَّنَا						
ऐ हमारे रब	37	शुक्र करें	ताकि वह	फल (जमा)	से	और उन्हें रिज्क दे
اِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِيْ وَمَا نُعْلِنُ ۚ وَمَا يَخْفٰى عَلٰى اللّٰهِ						
अल्लाह पर	छुपी हुई	और नहीं	हम ज़ाहिर करते हैं	और जो	जो हम छुपाते हैं	तू जानता है वेशक तू
مِّنْ شَيْءٍ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ ﴿٣٨﴾ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ						
वह जो - जिस	अल्लाह के लिए	तमाम तारीफें	38	आस्मान	में और न	जमीन में चीज़ से - कोई
وَهَبْ لِىْ عَلٰى الْكَبْرِ اِسْمٰعِيْلَ ۚ وَاسْحَقَ ۚ اِنَّ رَبِّیْ لَسَمِیْعٌ						
अलबत्ता सुनने वाला	मेरा रब	वेशक	और इसहाक (अ)	इस्माइल (अ)	बुढ़ापा	पर - मैं वख़शा मुझे
الدُّعَاۗءِ ﴿٣٩﴾ رَبِّ اجْعَلْنِیْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِیْ ط						
मेरी औलाद	और से - को	नमाज़	काइम करने वाला	मुझे बना	ऐ मेरे रब 39	दुआ
رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاۗءِ ﴿٤٠﴾ رَبَّنَا اغْفِرْ لِیْ وَلِیَّالِدِیْ						
और मेरे माँ बाप को	मुझे वख़शदे	ऐ हमारे रब	40	दुआ	और कुबूल फ़रमा	ऐ हमारे रब
وَلِلْمُؤْمِنِیْنَ یَوْمَ یَقُوْمُ الْحِسَابُ ﴿٤١﴾ وَلَا تَحْسَبَنَّ						
तुम हरगिज़ गुमान करना	और न	41	हिसाब	काइम होगा	जिस दिन	और मोमिनों को
اللّٰهُ غَافِلًا عَمَّا یَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ۚ اِنَّمَا یُؤَخَّرُهُمْ						
उन्हें मोहलत देता है	सिर्फ़	ज़ालिम (जमा)	वह करते हैं	उस से जो	बेख़बर	अल्लाह
لِیَوْمٍ تَشْخَصُ فِیْهِ الْاَبْصَارُ ﴿٤٢﴾ مُهْطِعِیْنَ مُقْنِعِیْ						
उठाए हुए	वह दौड़ते होंगे	42	आँखें	उस में	खुली रह जाएगी	उस दिन तक
رُءُوسِهِمْ لَا یَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ۚ وَاَفِیْدَتُهُمْ هَوَآءٌ ﴿٤٣﴾						
43	उड़े हुए	और उन के दिल	उन की निगाहें	उन की तरफ़	न लौट सकेंगी	अपने सर

ऐ मेरे रब! वेशक उन्होंने ने बहुत से लोगों को गुमराह किया, पस जिस ने मेरी पैरवी की, वेशक वह मुझ से है, और जिस ने मेरी नाफरमानी की तो वेशक तू बख्शने वाला निहायत मेहरबान है। (36)

ऐ हमारे रब! वेशक मैं ने अपनी कुछ औलाद को एक बगैर खेती वाले मैदान में बसाया है तेरे एहतिराम वाले घर के नज्दीक, ऐ हमारे रब! ताकि वह नमाज़ काइम करें, पस लोगों के दिलों को (ऐसा) कर दे कि वह उन की तरफ़ माइल हों, और उन्हें फलों से रिज्क दे, ताकि वह शुक्र करें। (37)

ऐ हमारे रब! वेशक तू जानता है जो हम छुपाते हैं और जो ज़ाहिर करते हैं, और अल्लाह पर कोई चीज़ छुपी हुई नहीं ज़मीन में और न आस्मान में। (38)

तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं, जिस ने मुझे बुढ़ापा में वख़शा इस्माइल (अ) और इसहाक (अ), वेशक मेरा रब दुआ सुनने वाला है। (39)

ऐ मेरे रब! मुझे बना नमाज़ काइम करने वाला, और मेरी औलाद को भी, ऐ हमारे रब! मेरी दुआ कुबूल फ़रमा ले। (40)

ऐ हमारे रब! जिस दिन हिसाब काइम होगा (रोज़े हिसाब) मुझे और मेरे माँ बाप को, और मोमिनों को वख़शदे। (41)

और तुम हरगिज़ गुमान न करना कि अल्लाह उस से बेख़बर है जो वह ज़ालिम करते हैं। वह सिर्फ़ उन्हें उस दिन तक मोहलत देता है, जिस में खुली रह जाएगी आँखें। (42)

वह अपने सर (ऊपर को) उठाए हुए दौड़ते होंगे, उन की निगाहें उन की तरफ़ न लौट सकेंगी, और उन के दिल (ख़ौफ़ से) उड़े हुए होंगे। (43)

और लोगों को उस दिन से डराओ जब उन पर अज़ाब आएगा, तो कहेंगे ज़ालिम, ऐ हमारे रब! हमें एक थोड़ी मुदत के लिए मोहलत दे दे कि हम तेरी दावत कुबूल कर लें, और हम पैरवी करें रसूलों की, क्या तुम उस से क़बूल कस्में न खाते थे? कि तुम्हारे लिए कोई ज़वाल नहीं। (44)

और तुम रहे थे उन लोगों के घरों में जिन्होंने ने अपनी जानों पर जुल्म किया था, और तुम पर ज़ाहिर हो गया था कि हम ने उन से कैसा सुलूक किया और हम ने तुम्हारे लिए मिसालें बयान कीं। (45)

और उन्होंने ने अपने दाओ चले, और अल्लाह के आगे है उन के दाओ, अगरचे उन का दाओ ऐसा था कि उस से पहाड़ टल जाते। (46)

पस तू हरगिज़ ख़याल न कर कि अल्लाह ख़िलाफ़ करेगा अपने रसूलों से अपना वादा, वेशक अल्लाह ज़बरदस्त बदला लेने वाला है। (47)

जिस दिन (उस) ज़मीन से बदल दी जाएगी और ज़मीन और (बदले जाएंगे) आस्मान, और वह सब अल्लाह यकता सख़्त क़हर वाले के आगे निकल खड़े होंगे। (48)

और तू देखेगा मुज़्रिम उस दिन बाहम ज़न्जीरों में जकड़े होंगे। (49)

उन के कुर्ते गन्धक के होंगे, और आग उन के चहरे ढांपे होगी। (50)

ताकि अल्लाह हर जान को उस की कमाई (आमाल) का बदला दे, वेशक अल्लाह तेज़ हिसाब लेने वाला है। (51)

यह (कुरआन) लोगों के लिए पैग़ाम है, और ताकि वह उस से डराए जाएं, और ताकि वह जान लें कि वही माबूद यकता है, और ताकि अक्ल वाले नसीहत पकड़ें। (52)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरवान, रहम करने वाला है अलिफ़-लाम-रा - यह आयतें हैं किताब की, और वाज़ेह (रौशन) कुरआन की। (1)

وَأُنذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَأْتِيهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُولُ الَّذِينَ ظَلَمُوا							
और डराओ	लोग	वह दिन	उन पर आएगा	अज़ाब	तो कहेंगे	वह लोग जो	उन्होंने ने जुल्म किया (ज़ालिम)
رَبَّنَا أَخْرِجْنَا إِلَىٰ أَجَلٍ قَرِيبٍ نُّجِبْ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرَّسُولَ							
ऐ हमारे रब	हमें मोहलत दे	तरफ़	एक मुदत	थोड़ी	हम कुबूल कर लें	तेरी दावत	और हम पैरवी करें
أَوَلَمْ تَكُونُوا أَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلِ مَا لَكُم مِّنْ زَوَالٍ ۚ وَسَكَنتُمْ							
या - क्या न	तुम थे	तुम कस्में खाते	इस से क़बूल	तुम्हारे लिए नहीं	कोई ज़वाल	44	और तुम रहे थे
فِي مَسْكِنٍ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ							
में	घर (जमा)	जिन लोगों	ने जुल्म किया	अपनी जानों पर	और ज़ाहिर हो गया	तुम पर	हम ने (सुलूक) किया
وَضَرَبْنَا لَكُمْ الْأَمْثَالَ ۚ وَقَدْ مَكَرُوا مَكَرَهُمْ وَعِنْدَ اللَّهِ مَكَرُهُمْ							
और हम ने बयान की	तुम्हारे लिए	मिसालें	45	और उन्होंने ने दाओ चले	अपने दाओ	और अल्लाह के आगे	उन के दाओ
وَإِنْ كَانَ مَكَرُهُمْ لِتَزُولَ مِنْهُ الْجِبَالُ ۖ فَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ مُخْلَفَ							
और अगरचे	था	उन का दाओ	कि टल जाए	उस से	पहाड़	46	पस तू हरगिज़ ख़याल न कर
وَعْدِهِ رَسُولَهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ ۖ يَوْمَ تُبَدَّلُ الْأَرْضُ							
अपना वादा	अपने रसूल	वेशक अल्लाह	ज़बरदस्त	बदला लेने वाला	47	जिस दिन	बदल दी जाएगी
غَيْرِ الْأَرْضِ وَالسَّمُوتِ وَبَرَزُوا لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۚ وَتَرَى							
मुख़्तलिफ़ ज़मीन	और आस्मान (जमा)	वह निकल खड़े होंगे	अल्लाह के आगे	यकता	सख़्त क़हर वाला	48	और तू देखेगा
الْمُجْرِمِينَ يَوْمِئِذٍ مُّقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ ۚ سَرَابِيلُهُمْ مِّنْ							
मुज़्रिम (जमा)	उस दिन	बाहम जकड़े हुए	में	ज़न्जीरें	49	उन के कुर्ते	से - के
قَطْرَانٍ وَتَغْشَىٰ وُجُوهُهُمُ النَّارُ ۖ لِيَجْزِيَ اللَّهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا							
गन्धक	और ढांप लेगी	उन के चहरे	आग	50	ताकि बदला दे	अल्लाह	हर जान
كَسَبَتْ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۖ هَذَا بَلَاغٌ لِلنَّاسِ وَلِيُنذَرُوا							
उस ने कमाया (कमाई)	वेशक अल्लाह	तेज़ हिसाब लेने वाला	51	यह पहुँचा देना (पैग़ाम)	लोगों के लिए	और ताकि वह डराए जाएं	
بِهِ وَلِيَعْلَمُوا أَنَّمَا هُوَ إِلَهُ وَاحِدٌ وَلِيَذَّكَّرَ أُولُوا الْأَلْبَابِ ۚ							
उस से	और ताकि वह जान लें	उस के सिवा नहीं	वह माबूद	यकता	और ताकि नसीहत पकड़ें	अक्ल वाले	52
آيَاتُهَا ۙ ۙ سُورَةُ الْحَجَرِ ۝ زُكُوعَاتُهَا ٦							
99 आयत सूरतुल हिज्र (15) 6 रुक़आत							
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है							
الرَّ ۚ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ وَقُرْآنٍ مُّبِينٍ ۝							
अलिफ़ लाम रा	यह	आयतें	किताब	और कुरआन	वाज़ेह - रौशन	1	